

प्राचीन राजस्थानी काव्य

प्राचीन राजस्थानी काव्य

सम्पादक
मनोहर शर्मा



साहित्य अकादेमी

Prachin Rajasthani Kavya : A selection from old Rajasthani poetry, compiled and edited by Manohar Sharma Sahitya Akademi, New Delhi (1985), Rs 20

© साहित्य अकादेमी

प्रथम संस्करण १९८५

साहित्य अकादेमी

प्रधान कार्यालय

रवीन्द्र भवन, ३५, फीरोजशाह मार्ग, नई दिल्ली ११०००१

क्षेत्रीय कार्यालय

ब्लॉक V-डी, रवीन्द्र सरोवर स्टेडियम, बलकत्ता ७०००२९

२६, एल्डाम्स रोड (द्वितीय मञ्जिल), सेनामपेट, मद्रास ६०००१८

१७२, मुम्बई मराठी ग्रन्थ संग्रहालय मार्ग, दादर, बम्बई ४०००१४

मूल्य

बीस रुपये

मुद्रक

सजय प्रिंटर्स,

दिल्ली ११००३२

भूमिका

राजस्थान र इतिहास पर आखो भारत गौरव अनुभव करै है पण ई ऐतिहासिक पात्रा रो निर्माण तो राजस्थानी काव्य रो प्रेरणा सू ईज हुयो, ई विषय मे भी दो मत नी हुय सकै । तारलै लगभग एक हजार बरसा सू राजस्थानी भाषा मे बराबर काव्य सर्जना हुय रैयी है अर या साहित्य-निधि घणी विशाल तथा अण-मोल है । हाल-ताई ई साहित्य सम्पत्ति रो पूरो लेखो-ओखो भी नी हुय पायो है पण ई रो जितरो भी अश प्रकाश मे आयो है, उण रो महिमा सू काव्य-पारखी अर साहित्य-रसिक चमत्कृत है ।

साहित्य अकादमी रो यो निर्णय घणो ब्रह्माण-जोग है कै पुराण राजस्थानी काव्य-साहित्य रो एक प्रतिनिधि सग्रह प्रकाशित कर्यो जावै, जिणसू मोटे रूप मे एक साधारण पाठक भी ई सू अणजाण नो रैवै अर ईरो गौरव-गरिमा नै जाण लेवै अकादमी दूजी भारतीय भाषावा रा भी इसा सग्रह प्रकाशित कर्या है अर उणीज श्रृंखला रो एक कडी यो प्रकाशन भी है ।

राजस्थानी काव्य-साहित्य रो विशालता अर साथै ही विविधता नै देखता यो काम घणो दोहरो है कै ई काव्य-निधि रो सगळी बानगिया किण रूप मे सजाई जावै ?

ई रै साथै या चीज भी ध्यान देवण-जोग है कै पुराण राजस्थानी काव्य रो बडो अश हाल ताई अणछप्यो है अर प्रकाश मे आवण रो उडीक मे है । निश्चय ही प्राचीन राजस्थानी काव्य रो मात्र प्रकाशित पोषिया रै आधार पर ही राजस्थानी रो प्रतिनिधि काव्य-सग्रह हस्त प्रतिया रै सहारै बिना पूरो नी हुय सकै अर हस्त प्रतिया रो अवलोचन घणो थम-साध्य है ।

ई रै साथै ही राजस्थानी भाषा म इसी सामग्री भी घणी मात्रा मे प्राप्त है, जिण रा रचयिता अज्ञात है अथवा लोकमुख सू सुणर समय-समय पर लिपिबद्ध करी जावती रैयी है । इसी हालत मे उण रो मूळपाठ एक समस्या है जिण

रो ममाधान भी सहज नी है। ई सामग्री रो बानगी भी राजस्थानी काव्य-सग्रह सू टाळी नी जा सकै।

प्रश्न यो भी है कै प्रतिनिधि-सग्रह मे कवि नै इवाई भान्यो जावै अथवा कविता नै? ई रै साथै यो सवाल भी जुड़योडो है कै सम्पादक आप रो पसद नै प्रधानता देवै अथवा लोक-रुचि नै?

ई सारी वाता नै ध्यान मे राखर चेष्टा करी गई है कै सग्रह मे पुराणै राजस्थानी काव्य रा नमूना सकलित करता प्रकाशित अर अदकाशित दोनू भात रो सामग्री रो उपयोग कर्यो जावै अर कवि साथै कविता नै भी जरूरत-मुताबिक ईकाई मानर यथोचित प्रतिनिधित्व दियो जावै। साथै ही सम्पादक रो पसद नै गौण मानर रचना नै ही प्रधानता दी जावै, जिण सू समग्र पुराणी परम्परा रै राजस्थानी काव्य रो एक सागोपाग चित्र परगट हुय सकै।

राजस्थानी काव्य-साहित्य विषय रो दृष्टि सू विविधता-पूर्ण है तो साथै ही रचना-प्रकार रै विचार सू भी उण मे अनेक विधाया है। 'डिगल गीत' जिसी कई चीजा तो उण मे एकदम ही अनूठी है।

ध्यान राखणो चाहिजै कै राजस्थानी रो पुराणो साहित्य ई प्रदेश रै इतिहास साथै एकप्राण है और ई क्षेत्र मे एक भी इसो विशिष्ट व्यक्ति नी रैयो, जिण रै सम्बन्ध मे विणी रूप मे काव्य-रचना नी मिलै।

साधारण तौर सू राजस्थानी रो पुराणो-साहित्य वीर रस रो साहित्य ही समझ्यो जावै है अर या उण रो एक खरी विशेषता है भी, पण साथै ही राजस्थानी भाषा मे दूजै रसा सू सम्बन्धित सामग्री भी कम कोनी अर वा ऊचै दरजै रो भी है।

राजस्थानी रो शृंगार-रसात्मक साहित्य कम महत्त्वपूर्ण नी है तो साथै ही ई रो भक्ति-साहित्य भी विशाल अर महिमा-मय है। राजस्थानी भक्ति-धारा मे निर्गुण अर सगुण भक्ति रो पूरो प्रवाह तो है ही पण अठै राम तथा कृष्ण रो भक्ति साथै शक्ति-उपासना सू सम्बन्धित रचनावा रो सख्या भी कम नी है। राजस्थानी भक्ति-साहित्य रो या खूबी है कै अठै श्रीकृष्ण रै गोपीवल्लभ रूप नै प्रधानता न दी जायर स्वमणी-उद्धारक अथवा जगत-उद्धारक रूप नै प्रमुखता दी गई है। इण भात राजस्थानी काव्य मे वीरता अर भक्ति रो अनूठो समन्वय देखणै-जोग है।

प्रस्तुत सग्रह मे कवि अथवा रचनावा करीब-करीब कालक्रम सू राखी गई है। प्रारभ मे 'लोकवाणी' शीर्षक सू वै दूहा दिया गया है, जिवा आचार्य हेमचद्र सुरि आप रै व्याकरण-ग्रथ मे उदाहरण-स्वरूप सकलित कर्या है। ये दूहा आचार्य हेमचद्र रो रचना नी हुयर उण जमानै रो लौकिक साहित्य-सम्पत्ति है पण या असाधारण रूप सू महत्त्वपूर्ण है। या विचार-धारा अथवा भाव-धारा आगे भी राजस्थानी काव्य मे किणी रूप मे चालती रैयो है।

साथै ही ध्यान राखणो चाहिजै कै चद, नरपति नाल्ह अर बहादर ढाढी रो

रचनावा काल तथा पाठ रँ विचार सू विवाद-ग्रस्त है। ई कारण ई कविया री रचनावा रा नमूना कालक्रम नँ छोडर मुविधा रँ विचार मू राजस्थान री अति-प्रसिद्ध लोकगाथावा ('ढोला-मारू रा दूहा' तथा मेह ऊजळी रा सोरठा') रँ पूर्व-क्रम मे राहया गया है। आशा है, विज्ञ पारखी ई चीज नँ काई नई स्थापना रँ रूप मे ग्रहण नी करसी।

प्रस्तुत सग्रह मे शालिभद्र सूरि (१३वी सदी वि०) पाल्हण (१३वी सदी वि०) अर विनयचंद्र सूरि (१३वी सदी वि०) री रचनावा घणी पुराणी है। इणा मे लारली दोनू रचनावा प्रकृति-काव्य रा नमूना है। इणी भात अज्ञात कवि री 'बमत' शीर्षक रचना भी पुराणी है अर प्रकृति-काव्य री बानगी है।

श्रीधर व्याम (१५वी सदी वि०), शिवदाम गाडण (१५वी सदी वि०), भीम (१४६६वि०), पद्मनाभ (१६वी सदी वि०), भाण्डल व्यास (१६वी सदी वि०), कुशळनाभ वाचक (१७वी सदी वि०), हेमरतन (१७वी सदी वि०) माघोदास दधवाडियो (१७वी सदी वि०), सायो झूलो (१७वी सदी वि०), समयमुन्दर महोपाध्याय (१७वी सदी वि०), जगो खिडियो (१८वी सदी वि०), किसनल (१८वी सदी वि०), गिरधर आशियो (१८वी सदी वि०), अजीर्तासिध महाराजा (१८वी सदी वि०), वीरमाण रतनू (१८वी सदी वि०), करणीदान कवियो (१८वी सदी वि०), मछ (१९वी सदी वि०), किसनो आढो (१९वी सदी वि०) आदि री कवितावा वा रँ प्रबध-काव्या माय सू चुन्योडा नमूना है अर विविध विषया सू सम्बन्धित है।

अलूनाथ कवियो (१७वी सदी वि०), ईसरदास रोहडियो (१७वी सदी वि०), केसोदाम गाडण (१७वी सदी वि०), पृथ्वीराज राठौड (१७वी सदी वि०), पीरदान लाळस (१८वी सदी वि०), रामनाथ कवियो (१९वी सदी वि०), चतुरसिंह महाराज (२०वी सदी वि०) आदि राजस्थानी रा प्रसिद्ध भक्त-कवि है। इणा मे अनेक कवि इसा भी है, जिका भक्त-कवि रँ साथै ही अप्रतिम वीर-कवि भी है। इण भात राजस्थानी काव्य मे वीरता अर भक्ति री समन्वय भी देखणै जोग है।

पद्मना भट्टि० (१५४३ वि०), कृपाराम खिडियो (१९वी सदी वि०), राय-सिध साडू (१९वी सदी वि०) आदि री रचनावा राजस्थानी रँ नीति-काव्य रा नमूना है।

गोरधन बोगसो (१७वी सदी वि०), मालो साडू (१७वी सदी वि०), पदमा (१७वी सदी वि०), दुरमो आढो (१७वी सदी वि०), पृथ्वीराज (१७वी सदी वि०),

१ प्रस्तुत पद्य राजस्थानी कवियों रा नाम पुराणी परम्परा रँ अनुसार लिख्या गया है। इस प्रयोग मे किणी भान असम्मान री भावना नी ममती जावै।

जाडो मेहडू (१७वीं सदी वि०), नरहरिदास (१७वीं सदी वि०), बृभवरण सांडू (१८वीं सदी वि०), धर्मबंधन उपाध्याय (१८वीं सदी वि०), हुबमीचद घिडियो (१९वीं सदी वि०), बाकीदास आशियो (१९वीं सदी वि०), नवलदान साब्बस (१९वीं सदी वि०), सूर्यमल्ल भीसण (१९-२०वीं सदी वि०), हिंगळाजदान कवियो (२०वीं सदी वि०) आदि रा डिगल-नीत राजस्थानी भाषा री अनूठी रचनायां है ।

डिगल-नीत साथै राजस्थानी मे 'दूहो' छद भी सदा मू घणो लोकप्रिय रैयो अर अठे अनेक दूहामयी रचनावा हुई है । नीति, भक्ति और शृंगार रस रा दूहा-सोरठा तो अति प्रसिद्ध है पण साथै ही बीर रस रा दूहा भी गजब रा है । प्रस्तुत सग्रह मे डूगरमी रतनू (१७वीं सदी वि०) अर बेसरीसिध बारहठ (२०वीं सदी वि०) रा दूहा ई विषय मे वानगी रूप है ।

मीराबाई (१६वीं सदी वि०), बाजी महमद (समय अनिर्णय), बखतावर आदि रा गेय पद समय-समय पर हस्त-प्रतिया मे सक्लित कर्या जावता रैया है अर आज भी ये पद राजस्थान मे घणा लोक-प्रिय है ।

साहित्य अकादमी रो यो निश्चय रैयो बे यो काव्य-मवलन पुराणे राजस्थानी काव्य रो पुरो प्रतिनिधित्व तो जरूर करै पण साथै ही एक कवि री एक ही रचना ली जावै तो ठीक रहसो । इसी हालत मे या चीज जरूरी समझी गई कै प्रमुख कवि री रचना रै वानगी-रूप मे भला ही एक ही 'गीत' अपवा छोटी सो काव्याश दियो जावै पण उण रो प्रतिनिधित्व ई सग्रह मे जरूर रैवै । फेर भी इसा विशिष्ट कवि हुय सकै है, जिणा री कविता रा नमूना ई सग्रह मे स्थानाभाव मू सम्मिलित नी कर्या जा सक्या है ।

जिवा कवि ई सग्रह मे शामिल कर्या गया है, वा मे भी कई इसा है कै वा री मात्र एक ही रचना रो नमूना दियो जावै तो वा रो सही सरूप किणी भात भी पुरो परगट नी हुय सकै । इसी परिस्थिति मे कई विशिष्ट कविया री एकाधिक रचनावा रा नमूना भी ई सग्रह मे सम्मिलित करणा जरूरी समझ्या गया है ।

साहित्य अकादमी सीमित कलेवर मे एक ग्रथ म हीज सम्पूर्ण प्राचीन परम्परा रै राजस्थानी काव्य रो पुरो स्वरूप प्रस्तुत करणे रो दायित्व सूप्यो । समय, सामर्थ्य अर परिस्थितिया री सीमावा म जो कुछ भी काम बण सकयो, वो सहृदय पाठका री सेवा मे प्रस्तुत है ।

साथै ही ध्यान राखणो चाहिजे कै 'प्राचीन राजस्थानी काव्य' भाय पुराणी परिपाटी रै सम्पूर्ण राजस्थानी काव्य रा नमूना क्रमिक रूप म प्रस्तुत कर्या गया है अर ई सग्रह ग्रथ रो अभिप्राय इणीज रूप मे ग्रहण कर्यो जावै ।

टीप

लोकवाणी (संकलित)	हेमचद्र सूरि	१३
भरत बाहुबळी	शालिभद्र सूरि	१५
वियोगिनी	पाल्हण	१७
राजमती विरह	विनयचद्र सूरि	१९
रणमल्ल	श्रीधर व्यास	२१
पाटण	भीम	२३
अचळदास खीची	सिवदास गाडण	२५
समियाणो	पद्मनाभ पडित	२७
वसंत	अज्ञात कवि	२९
जोहर	भाडड व्यास	३१
प्रेम सचार	गणपति कायस्थ	३३
पृथ्वीराज चौहाण	चद	३४
चीरी	नरपति नाल्ह	३५
शरणागत	बहादर ढाढी	३७
मग्वण, सदेश	लोकगाथा	३९
ऊजळी	लोकगाथा	४२
नारायण	अलूनाथ कवियो	४४
नीति-वचन	पद्मनाभ (२)	४६
सेना प्रयाण	अज्ञात कवि	४८
रातीवाहो	सूजो वीठू	५०
पव	मीराबाई	५३
नृत्य-विलास	कुसळलाम घाचक	५५
सती ऊमादे, वाघजी रा दूहा	आशानद बारहठ	५६
हालां झाला रा कुडळिया, बह्म-दर्शन	ईसरदास रोहडियो	५८
राय अमरसिंध राठीड, बलुजी		
घांपावत, नीसाणी	केसोदास गाडण	६२
बहूलोलखां-वध	गोरधन बोगसो	६४
प्रतापसिंह	मालो सादू	६५

महावीर कन्ताजी गणमलौत	दूदो आशियो	६७
रार्धासिध कल्याणमलौत कमालखां (जाळौर) जंमलमेर री जस	रगरेळो (वीरदास वीठू)	६८
बादळ री वीरता	हेमरतन	७१
वीसूजी (दुरगा) री स्तुति	हेम कवि	७५
जयमल्ल	ईसरदास रतनू	७७
राठीड अमरसिध (वीकानेर)	पदमा	८०
प्रतापसी गीत	दुरमी आढो	८१
प्रभात गगाजी गीत	पूय्वीराज राठीड	८३
सीता हरण	माघोदास दधवाडियो	८६
बाल गोपाल	सायो झूलो	८८
सबद बाणी	काजी महमद	९०
सीता रावण सवाद	समयसुदर महोपाध्याय	९३
राणा प्रतापसिंह	जाढो मेहडू	९४
कुबर रामसिध (आमेर)	नरहरिदास	९५
सूरा पूरा	जगो खिडियो	९६
दुर्गादास	कुभकरण मादू	९८
कूपो महोराजौत	डूगरसी रतनू	९९
कवित्त छप्पय	जिनहर्षं मुनि (जसराज)	१००
कैलास कुमार बिजय	किसनी	१०१
सरस्वती वदना (गीत) मेह (गीत)	धर्मबंधन उपाध्याय	१०४
जिबाजी (गीत) दुर्गादास(गीत),	गिरधर आशियो	१०७
हल्दीघाटी	अजीतसिंह (महाराजा)	१०९
गजमोल	वीरभाण रतनू	१११
राजकुमार री जन्मोसव	वरणीदान कवियो	११३
सेना रा वाहण—ऊट हाथी घोडा	बरजूवाई	११६
महाराजा अर्धासिध री सेल	पीरदान ताळस	११७
गुण अलख	वेसरीसिध जेतावत	११८
कुडळिया	ओपो आढो	१२०
वळं न वागड वास	हुकमीचद खिडियो	१२३
ठाकर जोर्धासिध नायावत	किरपाराम खिडियो	१२५
नीति वचन		

भरत	मछ (मनसाराम)	१२७
श्री करणोजी (गीत), पाबूजी राठोड़ (गीत), उद्बोधन (गीत)	बाजीदास आशियो	१२८
डिगल री महिमा	नवलदान लाळस	१३१
धीराम स्तुति	किसनो आढो	१३२
नीति	रायसिध सादू	१३३
गोपी विरह (पद)	बखतावर	१३४
द्रौपदी री पुकार	रामनाथ कवियो	१३६
वीर-लोक, गीत	सूर्यमल्ल मीसण	१३८
उन्हालो	ऊमरदान	१४०
रे मन (पद), ब्रूहा	चतुरसिह (महाराज)	१४१
चेतावणी रा चूगट्या	केसरीमिध बारहठ	१४२
कपूत (गीत), सपूत (गीत)	हिगळ्ळाजदान कवियो	१४४

लोकवाणी

—हेमचन्द्र सूरि

पुत्ते जाए कवणु गुणु, अवगुणु कवणु मुएण ।
जा बप्पी की भुहडी, चम्मिज्जइ अवरेण ॥१॥

जइ भग्गा पारववडा, तो सहि मज्झु पिएण ।
अह भग्गा अम्हहत्तणा, तो तें मारि अडेण ॥२॥

भग्गउ देविखवि नियय बलु, बलु पसरिअउ परस्सु ।
उम्मिलइ ससि रेह जिबें, करि करवालु पियस्सु ॥३॥

जहि कप्पिज्जइ सरिण सरु, छिज्जइ खग्गिण खग्गु ।
तहि तेहइ भड-घट-निवहि, वन्तु पयासइ मग्गु ॥४॥

सगरसएहि जु वण्णिअइ, देखु अम्हारा कतु ।
अइमत्तह चत्तइवुसह, गयकुभइ दारन्तु ॥५॥

अम्हे घोवा रिउ बहुअ, कायर एम्ब भणन्ति ।
मुद्धि निहालइ गयणयलु, कइ जण जोण्ह करन्ति ॥६॥

महु वन्तहो वे दोसडा, हेल्लि म झड्घहि आलु ।
देन्तहो हउ पर उव्वरिअ,, जुज्जन्तओ करवालु ॥७॥

पाइ विलग्गी अन्नडी, सिध ल्हसिउ छघस्सु ।
तोवि कटारइ हत्थइउ, बलि किज्जउ वन्तस्सु ॥८॥

भन्ता हुआ जु मारिआ, बहिणी महारा वन्तु ।
सज्जेज्ज तु वयसिअहु, जइ भग्गा घर एन्तु ॥९॥

ते मुग्गडा हराविया, जे परिविद्धा ताहें ।
अवरोप्पइ जोअन्ताह, सामिउ गच्चिउ जाहें ॥१०॥

हिअडा जइ वेरिअ पणा, तो कि अग्गि चडाह ।
अम्हाहि वे हत्थडा, जइ पुणु मारि मराह ॥११॥

(२)

जे महू दिण्णा दिबहडा, दइए पवसन्तेण ।
ताण गणन्तिए अङ्गुलिउ-जज्जरियाउ नहेण ॥१॥

वायसु उट्टावन्तिअए, पिउ दिट्ठउ सहसत्ति ।
अट्टा वलया महिहि गय, अट्टा फुट्ट तडत्ति ॥२॥

जइ ससणेही तो मुइअ, अह जीवइ निन्नेह ।
बिहिहि पयारेहि गइअ घण, कि गज्जहि खल मेह ॥३॥

जइ केवई पावीसु पिउ, अकिया कुइड करीसु ।
पाणीउ नवइ सरावि जिबे, सब्बङ्गे पइसीसु ॥४॥

अज्जवि नाहु महुज्जि घर, सिद्धत्था वन्देइ ।
ताउ जि विरहु गवक्खेहि, मक्कड्डुघुग्घि देइ ॥५॥

(३)

गुणहि न सपइ कित्ति पर, फल लिहिआ भुज्जन्ति ।
केसरि न लहइ बोड्डिअवि, गय सक्खेहि घेप्पन्ति ॥१॥

जो गुण गोवइ अप्पणा, पयडा करइ परस्सु ।
तसु हउ कलिजुगि दुल्लहहो, बलि किज्जउ सुअणस्सु ॥२॥

जाम न निवडइ कुभयडि, सही चवेडचडक्क ।
ताम समत्तहँ मयगलइ, पइ पइ वज्जइ ढक्क ॥३॥

धवलु विसूरइ सामिअहो, गरुआ भरु पिक्खेवि ।
हउ कि न जुत्तउ दुहु दिसिहि, खण्डइ दोण्णि करेवि ॥४॥

जीविउ कामु न वल्लहउ, घणु पुणु कामु न इट्ठु ।
दोण्णिवि अवसर निवडिआइ, तिण-सम गणइ विसिट्ठु ॥५॥

जइ पुच्छइ घर बट्टाइ, तो बट्टा घर ओइ ।
विहलिय जण अम्मुदरणु, कन्तु कुडीरइ जोइ ॥६॥

महु कन्तहो गुट्टुट्टिअहो, कउ झुम्पडा बलन्ति ।
अह रिउ रुहिरँ उल्लवइ, अह अप्पणे न भन्ति ॥७॥

गयउ सु केसरि पियहु जलु, निच्चन्तइ हरिणाइ ।
जमु केरए हुकारडए, मुहहु पडन्ति तृणाइ ॥८॥

(सकलित)

भरत-बाहुवली

—शालिभद्र सूरि

वेगि सुवेग सु बुल्लइ, सभळि बाहुवळि ।
राउत बोइ तुह तुल्लइ, ईणिइ अछइ रवि-तळि ॥७६॥

जा तव वघव भरह नरिदो,
जसु भुइ कपइ सगि सुरिदो ।

जीणइ जीता भरह छ षड,
म्लेच्छ मनाव्या आण अण्ड ॥८०॥

भडि भडत न भूपवळि भाजइ,
गडयडतु गडि गाडिम गाजइ ।
सहस बतीस मउडाघा राय,
तूय वघव सवि सेवइ पाय ॥८१॥

धऊइ रयण धरि नवइ निहाण,
सछ न गय षड जसु वेवाण ।
रूय हवठा पाटह अभिपेवो,
तूय नवि आवीय वयण विवेको ॥८२॥

विण वघव सवि सपय ऊणो,
जिम विण तवण रसोइ अलूणो ।
सुम्ह दंभण उतकठिव राउ,
नित नित वाट जोइ सु भाउ ॥८३॥

वडउ महोयर अनइ वड घोर,
देव ज प्रणमइ माहस घोर ।
एर गोह अनइ पाखरीउ,
भरहेमर नइ तइ परखरीउ ॥८४॥

तु बाहूबलि जपइ, वहि वयण म काचु ।
भरहेसर भय कपइ, ज जग तु साचु ॥८५॥

समरणणि तिणि सिउ कुण काछइ,
जोह बघव मइ सरिसउ पाछइ ।
जावत जबुदीपि तसु ताण,
ता अन्ह कहीइ बवण ए राण ॥८६॥

जिम जिम सु जि गढ गाढिम गाढउ,
हय गय रहवरि करीय सनाढउ ।
तस अरधासण आपइ इदो,
तिम तिम अन्ह मनि परमाणदो ॥८७॥

जु न आव्या अभियेकह वार,
नु तिणि अन्ह नवि कीघा सार ।
वडउ राउ अन्ह वडउ जि भाई,
जहि भावइ तिहा मिलिसिउ जाई ॥८८॥

अन्ह ओळग नी वाट न जोई,
भइ भरहेसर विकर न होई ।
मइ बघव नवि फीटइ कीमइ,
लोभीया लोक भणइ लख ईन्हई ॥८९॥

(‘भरतेश्वर बाहूबलि रास’ सू)

वियोगिनी

पल्हण

पोगु सु पत्तउ मतिहि सियाह,
घिउ घेउर सापसिय वसाह ।
लाहु सावण भोयणु होइ,
पोताउ पिडु सयणु जग लोए ।
जादरि मज्जवडि ओदण ए,
रयणि दिवमि ननु पडइ तुमारो ।
सु कुमरि गदुयिय इव भणए,
मइ मेल्हिवि गउ नेमिकुमारो ॥७॥

माहु महाभट्टु हिम मिय-वागु,
वण वणमइ पुड्ढणि सिय-दाघु ।
मिउ मिउ मिउ जणु अचरणे,
जा हरि मज्जि सहउ अनुमरणे ।
एव रयणि वरिमाअरिय,
कुमरि भणइ, किम वरि पयणाउ ।
नेमि विहुगा परि दिन,
हा विधि, दइय न लेखे साए ॥८॥

आउ धागम पागुण तणउ,
अति मिउ पवणु पदइद घणउ ।
गिरि तरवर पत्त पाव मज्जाहि,
राज्जहि राज्ज मिग्ग घरि जाहि ।
रिणि रिणि अणु मरुओउअण,
निग्ग निग्ग गावहि बहु दुय भार ।
कुमरि भणइ, किम भागमभो,
तइ विणु, गादिय नेमिकुमार ॥९॥

चीतु ससिरु सपत्तु बसतु,
 मालइ-मालय कमल विहसतु ।
 मह्य गलहि मउरिया सहार
 कोइल महुर करहि क्षकार ।
 तरुणि नयणि काजळु ठवहि,
 निवसहि चीरु हळावहि हारो ।
 तो न चनइ मनु मुझ-तणओ,
 हुयवहु सरणु कि नेमिबुमारो ॥१०॥
 बयसाहहें विहसइ वणराए,
 बेउलु कुडु निवालिय जाए ।
 चपउ पाडल कुलुव वल्हारो,
 दवणउ मरुअउ देवगधारो ।
 जणु परिमळ मोहिउ भमए,
 महु चीतत निसि नीडि विहाए ।
 नमिकुमरु तव चरणु गओ,
 सखि वंसायु दुहेलउ जाए ॥११॥

(‘नेमि वारहमासो’ सू)

राजमती-विरह

विनयचन्द्र सूरि

सावणि सरवणि बड्डुय मेहु,
 मज्जइ विरहि रि म्मिज्जइ देहु ।
 विज्जु झवक्कड रक्खमि जेम,
 नेमिहि विणु सहि सहियर केम ॥२॥
 गयी भणइ, सामिणी म म झूरि,
 दुज्जण सणा न वछिन पूरि ।
 गयउ नेमि तउ विणठउ वाइ,
 अछइ अनेरा वरइ मयाइ ॥३॥
 सोलइ राजन तउ इहु यणु,
 नरयो नेमि मम वर-रयणु ।
 धरइ तेजु गहगणि मवि ताव,
 गयणि न उगइ दिणयर जाव ॥४॥
 भाइवि भरिया मर विषमेवि,
 सवण्ण गेअइ राजत देवि ।
 हा एअरही मइ निग्घार,
 विम उणेयिणि वण्णा गार ॥५॥
 भणइ गयी, राजम म म रोइ,
 नोइइ नेमि न धणु होइ ।
 गिबिय तण्णर पण्णिसवणि,
 गिरिवर पुण बड्ढेरा दूडि ॥६॥
 गावउ मवि, वर गिरि भिअरि,
 विमइ न भिअरइ गामठ वरि ।
 पण वरिमाइ मर पुअरि,
 एअर पुण मनु ओअइ विदि ॥७॥

आसो भासइ अमु-प्रवाह,
 राजल भेलहइ विणु नेमिनाह ।
 दहइ चदु चदण हिम सोउ,
 विणु भतारह सउ विवरीउ ॥८॥
 सखि नवि धीना नेमिहि रेसि,
 म म आपणपउ सउ खय नेसि ।
 जिणि दिक्खाडिउ पहिलउ छेहु,
 न गणिउ अट्ट-भवतर नेहु ॥९॥
 नेमि दयालू सखि निरदोसु,
 कीजइ उग्रसिण ऊपरि रोसु ।
 पसुय भराविउ मूकउ वाडु,
 मुझ प्रिय सरिसउ वियउ विहाडु ॥१०॥
 कत्तिग कित्तिग ऊगइ सझ,
 रजिमति जिज्झउ हुइ अति सझ ।
 राति दिवमु अच्छइ विलवत,
 बळि वळि दय करि, दय करि कत ॥११॥
 नेमि तणी सखि, मूकि न आस,
 वायरु भग्गउ सो घर-आस ।
 इमइ इसी सनेहल नारि,
 जाइ कोइ छडवि गिरिनारि ॥१२॥
 वायरु किम सखि, नेमि जिणिदु,
 जिणि रिणि जित्तउ लख नरिन्दु ।
 फुरइ सास जा अगळि नास,
 ताव न मल्हउ नेमिहि आस ॥१३॥

(नेमिनाय चतुष्पदिका' सू)

रणमल्ल

श्रीधर व्यास

(चुणई)

मलिक भद्र मज्जिम निशिकिद्धुउ,
तव हेजव पुरमाण स दिद्धउ ।
ईइरणदि अबहि षडि चल्लउ,
जइ रणमल्ल पाति इम मुल्लउ ॥२७॥

मिर पुग्माण घरवि मुरनाणीय,
इयदर ज्ञान मान दोवाणीय ।
भगर गरात दाग तव छंटीय,
मिरि पावरी गान वर जंहीय ॥२८॥

अमियर मग्गि डाट्ट उम्भारीय,
बोनिइ हठि हेजव्व हवारीय ।
मुग्ग मिरिषमळ मेणाय मग्गिइ,
तु न्यपगनि भाण न उग्गिइ ॥२९॥

(मिह् बिलोकित्त)

ओ अवर पुडगळि तरनि तग्गिइ,
ता वमधज वंघ न घणट नग्गिइ ।
षरि षट्ठपानळ शाळ मग्गिइ,
तु मेण न जान्ण चाग विग्गिइ ॥३०॥

पुण रजाम ओणज्जइवही,
हुक्कमंदिनि षडि म षडि षट्ठी ।
वड्ढ वरिणु मुज्जइ उणीग नग्गु,
वइ मग्गिणी रा हग्गीरणु ॥३१॥

दळ दारुण दफरगान जवे,
 मिइ भग्गु अग्गि पगारवे ।
 हव पट्टण पद्धरि घरिसु अल,
 नइ विनडिमु सत्तिरि महम दळ ॥३२॥

मिइ सगरि सम्मसदीन नडी,
 पडिभग्गु अगोअग्गि भिडी ।
 जव मडिमि मुअ रणमल्ल सम,
 नव दाघिमि नमवर मग्गिमु जम ॥३३॥

म म मोडि म भडि मलिकव षणू,
 हू समरि विडारण मेछ तणू ।
 जव ऊठिमि हूठि हूक्कत रणे,
 तव न गणू पुण सुरताण मणे ॥३४॥

बळ बोलि म चलि मलिकव वहइ,
 मन करलिसि वरविमि बहुत्त मुह ।
 जव चपिसि ईडरसिहरतळ,
 तव पेखिसि मू रणमल्ल वळ ॥३५॥

(रणमल्ल छंद' सू)

पाटण

भीम

मदयच्छ प्रभ वृद्ध रसित,

वृद्धि वामिनि ते पाटण विमित ।

म्यामि, सत्तरद आपू छेर,

सामद दव दीहाडउ एव ॥४१२॥

त्रिणि पाटणि पोडा प्रागार,

मेर-निगुर-मित वृद्ध विवाद ।

गणउ गइ उपा आचाम,

विरि अहिणव दीगद वंताम ॥४१३॥

मात्रि मत्त विष्णु गद वृद्ध,

महू ममाचरद वृत्तोचित धर्म ।

दिवार भवति-सगउ अरि भाव,

अधिचउ परमेवरी प्रभार ॥४१४॥

बाधन बीर वमद रिहा वानि,

वृद्ध विरवर पत्तोटा आनि ।

त्रिणागन गाउउ गदगदद,

जीवदया देवी मन रदद ॥४१५॥

जे ओदिनि वउमन्नि नाम,

वउरानी चेटवन्नि निहि टाम ।

एतर भुन विहाष गद प्रेर,

माचउ माविनि-गणउ मनेन ॥४१६॥

गणपति शंकराज्जनी वानि,

दिवस पाहिदं वडेरी वानि ।

ठामि-ठामि मडळ मडाइ,
 ठामि-ठामि नित गुणिआ गाइ ॥४१७॥
 ठामि-ठामि ढोणा ढोईइ,
 ठामि-ठामि जोणा जोईइ ।
 सातइ वसण मावळीइ जोउ,
 माहि घणा छइ छइ माणस तउ ॥४१८॥
 इकि लीला लखिमी लइ जाइ,
 भोळा भमइ सा न विवाइ ।
 मणा न वामण मोहण-तणी,
 वरतइ धूरत विद्या घणी ॥४१९॥
 वमइ वासि क्षत्रीसद कुळी,
 माहि शुहु मुडघा नइ मडळी ।
 चउरासी सुरा मामत,
 च्यारि महाघर मत्रि अनन ॥४२०॥
 चउरामी चुहटानी जुगति,
 वरणावरण तणी बहू विगति ।
 उत्तम मध्यम लोन अपार,
 भामा भना न लाभट पार ॥४२१॥
 वरइ राज सालिवाहण राउ,
 वदरी तणउ विघसद टाउ ।
 अऊठ पोठ पहिनु पहिटाण,
 सामीय आनि-तणू अहिटाण ॥४२२॥

(‘सदयवत्स वीर प्रबध’ मू)

अचळदास खीची

सिवदास गाडण

उत्तर दक्खिण देस, पूरव नइ पच्छिम तणा ।
खडिया खउदाळिम वटव, नमिया सकल नरेस ॥१॥
तइ पतिसाह तणेह, पायाणउ पारम सुणि ।
हळहळिया हेवाणवइ, गळपति गमे-गमेह ॥२॥
तइ सचलतइ मूह, धूधळियउ, घर धमधमी ।
खउदाळिम खीची दिसइ, वियउ पयाणउ पूह ॥३॥

एवइ वन्न वमतडा, एवइ अतर वाइ ।
मीह ववडो नह लहइ, गइवर लविष विवाइ ॥१॥
गइवर-गळइ गळत्थियउ, जहो खचइ तहो जाइ ।
सोह गळयण जइ गहइ, तउ दह लविष विवाइ ॥
तउ दह लविष विवाइ, मोन जाणवि मुहोणरा ।
कइवा वारणि वयिन, कोपि खउदाळिम बेरा ॥
वेइ बीष पडियार, तिहसि वट्टारउ दुट्ट वरि ।
राइ न प्रहउ नरसिप, गळइ गळट्ठय जउ गइवरि ॥२॥

निरगइ अचळ निडार, सुरां गुरू सुरजइ उदइ ।
एकणि दिमि आपा अगुर, पट्टू जो परिवार ॥१॥
कळि पाळट करणीव, तातल सोम हमीर जिम ।
गइ अनियइ गांवा तणा, मिळइ राव मरणीव ॥२॥
मिळतइ मेळि कघार, गह मिळनइ परिवार-वइ ।
गगळउ घर गोपणतणउ, भाइ अइषउ अट्टारि ॥३॥

ठामि ठामि मडळ मडाइ,
 ठामि ठामि नित गुणिआ गाइ ॥४१७॥
 ठामि-ठामि ढोणा ढोईइ
 ठामि ठामि जोणा जोईइ ।
 सातइ वसण सावळीइ जोउ,
 माहि घणा छइ छइ माणस तउ ॥४१८॥
 इकि लीला लखिमी लइ जाइ,
 भोळा भमइ सा न विकाइ ।
 मणा न कामण मोहण-तणी,
 वरतइ धूरत विद्या घणी ॥४१९॥
 वमइ वासि शक्तीसइ कुळी,
 माहि शुद्ध मुडघा नइ मडळी ।
 चउरासी सुरा सामत,
 च्यारि महाघर मत्रि अनत ॥४२०॥
 चउरासी चुहटानी जुगति
 वरणावरण तणी बहु विगति ।
 उत्तम मध्यम लोक अपार,
 भामा भना न लाभइ पार ॥४२१॥
 वरइ राज सालिवाहण राउ,
 वइरी तणउ विघसइ ठाउ ।
 अऊठ पीठ पहिलू पहिठाण,
 सामीय आलि-तणू अहिठाण ॥४२२॥

(‘सदयवत्स वीर प्रबध सू)

अचलदास खीची

सिवदास गाडण

उत्तर दक्षिण देस, पूरव नई पच्छिम तथा ।
घडिया छउदाळिम बटव, नमिया सवन नरेम ॥१॥

तइ पनिसाह तणेह, पायाणउ पारम सुणि ।
श्टहळिया हेवाणवद, गदपति गमे-गमेइ ॥२॥

तइ मचलतइ गूर, धूधळियउ, घर घमघमी ।
गउदाळिम खीची दिगद, वियउ पयाणउ गूर ॥३॥

गुद वल वमतडा, एवड अतर काइ ।
गोह कवहुं नह लहड, गदवर लविग विवाइ ॥१॥

गदवर-गउद गळरिपणउ, जहें गषद तहें जाइ ।
गोह गळयण जइ गहड, तउ दह लविग विवाइ ॥
तउ द लविग विवाइ, गाउ जाणवि मुहेंगग ।
बटवा कारणि कपिन, कोणि गउदाळिम वेरा ॥
वा बोध पडियार, निळगि बट्टारउ हुट्ट करि ।
गद न भरउ नरगिष, गळद गळहूय जउ गदवरि ॥२॥

निरगद बबळ निहार, सुरी गुरू गुरजइ उदइ ।
एवणि दिगि भाया अगूर, पट्ट दूजो परिवार ॥१॥

बट्टि पाळट करणीक, सायल साय हमीर जिम ।
गद अविउद गावां तणा, मिळइ राय मरणीक ॥२॥

मिळउद देठि बघार, पट्ट मिळइ परिवार-वद ।
गदउउ पर गीयल गणउ, भाइ बडवउ अहवारि ॥३॥

इणि परि सहस सहस दुइ तुट्टइ,
 पगि पगि अडइ, न पग अवहट्टइ ।
 आलम अचळ सेन आवट्टइ,
 कनव जिही रहि-रहि वसयट्टइ ॥१॥

आलम अचळेसरि अइया, एही एव अवयव ।
 पिडि जेता हीदू पडइ, तेता सहम तुरवक ॥२॥

वाय धूजै गढ गागुरण, सिर धूजते सेस ।
 अचळ चलेवा आखडी, माथे उदव महेस ॥३॥

चहुवाणा घर रीत ए, ऋघ न नम्मै राण ।
 सो वयू जायै मेदनी, मो ऊमै वाखाण ॥४॥

घणा असुर घण घाइ पाटे अचळेमर पइयउ ।
 आपण दुरग न अपियउ, जीवत जाइल-राइ ॥१॥

अनि पहि जिम गढ ऊठि, ऊजड वरि आप्यउ नहीं ।
 लइ गोरी राउ गागुरण पइया भोजवत पूठि ॥२॥

सातल सोम हमीर वन्ह, जिम जउहर जाळिय ।
 चडिय खेति चहवाणि, आदि कुळवट्ट उजाळिय ॥
 मुगुत चिहुर सिरि मडि, वपि कठ तुळसी वासी ।
 भोजाउत भुजबळहि, वरहि कग्मर वाळासी ॥
 गढ खडि पडती गागुरण, दिढ दाखे सुरताण दळ ।
 समारि नाम, आतम सरगि, अचळ वेवि कीघा अचळ ॥३॥

{ अचळदास छीची री वचनिवा' सू }

समियाणो

पद्मनाभ

दळ चालता धरणी वापड, सेप न झालइ भार ।
सायर तणा पूर ऊळटिया, जेहवा रेळणहार ॥२/६३॥

वरगा ढोल नफेरो वाजइ, साथइ सहस अठार ।
जागी ढोल नीसाण ध्रमूकइ, मुणीइ जोयण वार ॥२/६४॥

पडइ वास भडवाय तुरक नइ, देस दहो दिसि नाठा ।
घणा दिवम दळ मारगि चाली, मारुआडि माहि पडटा ॥६५॥

झाझा नीर मरोवर मोटा, दीटा वारू टाम ।
पहिना दळ समीयाणे आध्या, वीघउ पाडि मुक्काम ॥६६॥

असपति राय इसूं मुखि बोलइ, आ गढ लीजइ घुरि ।
पाडो भेठि मेल्हीइ थाणू, तउ जाईइ जाळहुरि ॥६७॥

लोव सने नासी गडि चडीया, तुरके तळहटी रूधी ।
गढ ऊपलिउ राहवणु वारू, भली सजाई वीधी ॥६८॥

माठि बरस बावरता पुढुचइ, धान तणा कोठार ।
समीयाणे सातल सपराणउ, माहि भला झूझार ॥६९॥

सूवा छड चिणानी पूळी, कोरडि वडव अपार ।
पाच सहस सातल नी वालि, बघ्या चरइ तोषार ॥१००॥

काठी लूण बरस सु पुढुचइ, ऊपरि भली सजाई ।
पहिनइ पुहरि बिपुहरे सासइ, साद पडइ भूजाई ॥१०१॥

पाणी भरिया सरोवर ऊपरि, नीठइ नहीय लगार ।
जउ आवासि मेघ उळीचइ, तुहि न आवड पार ॥१०२॥

गिरि ऊपरि गढ घाहर विसमो, विममा पोळि पगार ।
 ऊचा कोठा घणी फारकी, वळी ति विसमा मार ॥१०३॥
 चडी त्रिबळसइ सातलि जोयू, दीठउ दळ सुरताणी ।
 गढ तळहटीइ सरोवर पाळि, हाथी बाघ्या आणी ॥१०४॥
 ठामि ठामि साबाण सिराचा, डहिली नड एव चोई ।
 ऊचे घाभे बारगइ दीधी, तेह तणी परि जोई ॥१०५॥
 अलब नेजा घणा मरातब, जोता पार न आवइ ।
 सातल नइ मनि साहण देखी, मोटउ अचिरज भावइ ॥१०६॥
 कटक तणी सामगरी दीठी, सातलि करिउ बखाण ।
 घन्य घन्य दिन आज अम्हारउ, जे आव्यउ सुरताण ॥१०७॥
 कोठइ कोठइ बर्या रखोपा, मोटा गडा चडाव्या ।
 चाहूआणि चिहू पासे भीति, भला यत्र मडाव्या ॥१०८॥
 ऊतावळी डीबुळी ऊपरि, पासे माडी मूकी ।
 आपापणे ठामि सहइ नित, राति जागइ चउकी ॥१०९॥
 ऊपरि धिवा ऊतरइ हीद्र, विलगइ रातीवाहि ।
 दीहइ वळी सइफळू माडइ, आवइ चउपट घाइ ॥११०॥
 नित नित सूडी नइ, गढि आवइ, साव दळइ सुरताण ।
 नित भिडड रोसाळा राउत, नइ सातल चहूआण ॥२/१११॥

(कान्हडदे प्रबध' सुं)

वसन्त

अज्ञात कवि

पङ्कतीय शिवरति समरति, हव रितु तणोय वसत ।
दह दिसि पसरइ परिमळ, निरमळ ध्या दिसि अत ॥

बहिनूए गयइ हिमवति, वसति लयउ अवतार ।
अनि मकरदिहिं मुहरिया, बुहरिया सवि सहकार ॥
वसत तणा गुण गहगह्या, महमह्या सवि सहकार ।
त्रिभुवनि जय-जयनार, पिवा रव करइ अपार ॥

पदमिनी परिमळ वहिवइ, नहवइ मलय ममीर ।
मयण जिहा परिपथीय, पथीय धाइ अधीर ॥

मानिनी जन मनशोभन, शोभन वाउला वाइ ।
निघुवन बेनि कलामीय, कामीय अगि मुहाइ ॥
मुनिजन ना मन भेदाए, छेदाए मानिनी मानु ।
कामीय मनह आनदाण, कदाए पथिवपराणु ॥

बनि विरच्या कदळीहर, दाहर मडप माल ।
तट्टीया तोरण सुदर, बदरवाळि विगाला ॥

गेवन वाजि मुग्राळीय जाळीय गुग्नि विधाम ।
मृगमद पूरि कपूरिहिं, पूरिहिं जळ अभिराम ॥
रगभूमी सज कारीय, शारीय बुबुम घोळ ।
सोत्रन गांकळ गाधीय, बाधीय धपक दोळ ॥

निहां वितसाद गवि कामुव, जामुव हृदय चद रति ।
काम त्रिम्या अळवेसर, वेस रचइ मर अगि ॥

अभिनव परि सिणगारीय, नारीय मिलइ वितेसि ।
 चदनि भरइ षचोळीय, चोळीय मडन रेसि ॥
 चदन वन अवगाहीय, नाहीय सरवर नीर ।
 मद सुरभि हिमलक्षण, दक्षण वाइ समीर ॥
 नयरु निरोपीय ती वनु, जीवनु तणउ युवान ।
 वास भुवनि तिहा विलसइ, जलसइ अलिअल आण ॥
 नव यौवन अभिराम ति, रामति करइ सुरगि ।
 स्वर्गि त्रिस्या सुर भासुर, रामु रमइ वरअगि ॥
 कामुक जन मन जीवनु, ती वनु नगर सुरगु ।
 राजु करइ अवभगिहि, रगिहि राउ अनगु ॥
 अलिजन वसइ अनत, वसत तिहा परधान ।
 तरुअर वास निक्केतन, केतन किशल सतान ॥
 वनि विलसइ श्रीय नदन, चदन चद चउ मीतु ।
 रति अनइ प्रीति सिउ सौहए, मोहए त्रिभुवन चीतु ॥

(‘वसत विलास’ सू)

जीहर

भाडउ द्यास

राय हमोर भीर नद कहन,
हाथी मारि म्मे कोई रहद ।
मेन्हद भीर प्राण अनि बाग,
नव नव हाथी पाटट टाण ॥२६१॥

मारिहोत्र मूधा मूघार,
मारोजद तेणद वार ।
घरि घरि जमहर लोरे बीया,
राउठ गुण बढइ छइ तिहा ॥२६२॥

जमहर रा माता धूपळा,
राय अन्तेउर लागे बळा ।
बरि सनात पहिरीया चीर,
जगतणे लूहीया मरीर ॥२६३॥

मिरि मिदूर मिघ तेडिया,
सवा कोटि का टीका बीया ।
नयणे बाजळ मारी रेह
मुत्र तयोळ समाण्या तेह ॥२६४॥

बाने बूटळ सळवइ तिया,
सूरिज चद री उपम जिया ।
बाहइ बाघ्या बहरण भला,
सोयन चूटी घळवइ तिला ॥२६५॥

आमुळिया सोहद मूदडी,
सवा साप री हीर जडी ।

कठ निगोदर उरि वर हार,
 पाइ नेउरि क्षणक्षणकार ॥२६६॥
 सोळ्ह सिंगार सपूरण कीया,
 नाचइ गावइ गाढी तीया ।
 आपण पणा सभाळइ प्रिया,
 बेऊ पक्ष ऊजाळइ त्रिया ॥२६७॥
 देव तणी देवी हुई जिसी,
 राय तणी असेउरि जिसी ।
 ते देखि देव खळभळइ,
 रायकुवरी इसी परि बळइ ॥२६८॥
 जाणे तिणि गडि पडिउ पुळउ,
 लोक सहू को लागउ बळउ ।
 अरथ भडार सजति समुदाय,
 राछ पीछ बळइ तिणि ठाउ ॥२६९॥
 सोना जडित बळइ पलाण,
 जीणसाळ हथियार लगाम ।
 पक्षक ढोल कमखानइ पाट,
 चरु द्रवाळु कचोळा वाट ॥२७०॥
 करणाळी सोना रूपा तणी,
 गरथिभरीय बळइ अति घणी ।
 कुमखा कतीफा जुन पटकल,
 सउडि तळाइ तणा अति पूर ॥२७१॥
 एकवीस भूमिया बळइ आवासि,
 जाइ ज्ञाळ लागी आकामि ।
 हणवति जेम पजाळी सक,
 से बीतक बीता रिणघभि ॥२७२॥

प्रेम-संचार

गणपति काव्यस्थ

पुष्पि परिमळ ईक्षु रस, दूध माहि घृत जेम ।
मुणि प्रीऊडा, तिम माहरद, पजरि पसरिउ प्रेम ॥४५८॥

नील पटले चोळना, रग तणी परि जेम ।
मुणि प्रीऊडा, तिम माहरद, पजरि पसरिउ प्रेम ॥४५९॥

त्वचा रक्त मग्जा माहि, अस्थि गूढ छद् जेम ।
मुणि प्रीऊडा, तिम माहरद, पजरि पसरिउ प्रेम ॥४६०॥

नार यथा मणिहार माहि, रम तरुवर माहि जेम ।
मुणि प्रीऊडा, तिम माहरद, पजरि पसरिउ प्रेम ॥४६१॥

वाजळ माहि वाळिमा, रगनि रातडि जेम ।
मुणि प्रीऊडा, तिम माहरद, पजरि पसरिउ प्रेम ॥४६२॥

नीरि नीर निरतरिउ, क्षीरि क्षीर ज जेम ।
मुणि प्रीऊडा, तिम माहरद, पजरि पसरिउ प्रेम ॥४६३॥

लोहडा माहि लीन-ध्यु, पावरा पसरद जेम ।
मुणि प्रीऊडा, तिम माहरद, पजरि पसरिउ प्रेम ॥४६४॥

स्वाद त्रियाणद, तिन तनद, जळ माहि शीत जेम ।
मुणि प्रीऊडा, तिम माहरद, पजरि पसरिउ प्रेम ॥४६५॥

सोनु रूपू राम रस्या, अतर धाय न जेम ।
मुणि प्रीऊडा, तिम माहरद, पजरि पसरिउ प्रेम ॥४६६॥

वाणी वायन वर्ण माहि, जगन्नाथ युग जेम ।
मुणि प्रीऊडा, तिम माहरद, पजरि पसरिउ प्रेम ॥४६७॥

(‘माधवानंद कामवदला प्रबंध’ सू)

पृथ्वीराज चौहाण

चंद

इक्कु बाणु पहुषीसु जु पद वदवासह मुक्कउ ।
उर भितरि खड्गडिउ धीर वक्खतरि चुक्कउ ॥
धीअ करि सधीउ भमई सूमेसर-नदणु ।
एहु सु गडि दाहिमओ खणइ छुइइ सइभरि वणु ॥
फुडु छडि न जाइ इहु लुम्भि (यउ), वारइ पलकउ खल गुलह ।
न जाणउ चदबलहि (यउ), कि न वि छुट्टइ इह फलह ॥१॥

अगहु म गहि दाहिमओ रिपु राइ खयकर ।
कूडु मत्तु भम ठवओ एहु जवूम मिनि जग्गर ॥
सह नामा मिक्खवउ जइ सिक्खविउ धुग्गइ ।
चपइ चद बलिद्धु मग्ग परमक्खर सुग्गइ ॥
पहु पहुविराय मइभरि धणी, सइभरि सउणइ सभिरिसि ।
कइवास विआस विसट्ट विणु, मच्छि वधि बद्धओ भरिसि ॥२॥

(सकलित)

चीरी

नरपति नाल्ह

चीने लिखी धण आपणइ हाथि
पडिया हो चालि हेडाऊ नय सायि
मान सउ बोमकउ गामनरउ
पडिया रूडा चालिज्यो देस की सीम
नावडउ गिणज्यो न छाहडी
म्हारी चीरी राखिज्यो जित थारउ जीव ॥८६॥

नाल्ह म्हवा दुख सहिमी वडण
म्हे तउ पलिंग तज्यउ नइ परहर्यउ लूण
पान गोपारीप विम वडइ
ने जपमाळीप मइ जणउ नाह
दोह गिणता नह घस्या
म्हावी बाग उडावता थाकीय जीमणी वाह ॥८७॥

जाणियउ हो राजा थावउ जाण
दुद रे वाया मिलउ एक पराण
सा कयउ दूरि-थी मेल्लियइ
बुळ थी रे वेटीय सील जजीर
जोरन रागउ मइ चोर जित
पनि पनि तो नइ पडूव रे पाप
दणि भवि उळणाणउ हूउ
अवर भवि हायउ बाळउ माप ॥८८॥

पडिया जइ न चां तयउ प्रीय नइ देमि
हुउ रि वडउ बीग तिउ रि बहमि
एउ मग पनि भावज्यो
पारी माट बुहारु गिरह वा केडि

जो भरि जळ उलट्यउ
 थाग न पावु घरह नरेस ॥६३॥
 पडिया तिम कहेस्यो जिम प्रिय नि रिसाइ
 साधण तुझ विण अन्न न घाइ
 कुहाणी फाटउ रे कचुयउ
 खोपरि फाटउ तु घण केरउ चीर
 जिम दव दाधी लाकडी
 तू तउ उवइगउ रे आविज्यो नणद का धीर ॥६४॥

कहि नइ गोरी थारा प्रीय रा अहिनाण
 थोडा थोडा म्हानय दे सहिनाण
 किण उणहारइ सारिखउ
 लहुडा देवर कइ उणहारि
 एह गोरउ प्रीय सामळउ
 सीस तिलक नितु नवइ रे विहाण
 उरि चौडउ कडि पातळउ
 ऊचउ रे जाडउ कडि जमडाढ
 लाखा माहि पिछाणिजइ
 पडिया प्रीय छइ एह सहिनाण ॥६५॥

धीरी जनोइय दीन्ही छइ सर्ठ
 सहम सोनइया बाघ्या छइ गठि
 वरम दीहा कउ र सवळउ
 घीय घणउ जीमज्यो जिम पगि हुवइ प्राण

पहिरज्यो सावरी पाणहो
 चिहु घडिया माहे तू देइ मेल्लाण ॥६६॥

बाहुडि गोरडी तू घरि जाह
 हू लेकरि आवउ थारडउ नाह

सउण ते बधिया गाठडी
 सान सोपारीय दीधीय छोडि

बोलियउ छउ ते निरवाहिज्यो
 पाय लागीय घण वे कर जोडि ॥६७॥

शरणगत

बहादुर ढाढी

(दूहा)

मैमद नै जगमान रै, जबर वर ओ जाण ।
आया सरणै जोईया, सिध छोई साहिवाण ॥१॥
मलीनाथ बधु मुदै, वीरम करै मुवात ।
अतहपुर वीरम त्रिया, मागळियाणी हात ॥२॥

(नीसाणी)

माल तणै घर बार भज, वीरम वरदाई ।
सारो वीरम रो सरव, बित मगळ थाई ।
मिळिया वीरम जोईया, भेळप दरसाई ।
आया डोढी करै, सामल सारा ई ।
मागळियाणी सू दलो, भल हो धम-भाई ।
सात पोसाखा सात मो, मोहरा गुजराई ।
बेस विसू मासू वर्षे, भूखा सिपवाई ।
आया सरणै आप रै, ओडी उतराई ।
दलै वैंयो इण देस भे, वैंसा मै चाई ।
वीरम रा मै सापरत, सह कोय सिपाई ।
अरज करो धे आप सू, मो जाणै भाई ।
रावळ सरणै राखसी, वबो विरदाई ॥

(दूहा)

मागळियाणी महल री, वीरम मानो वात ।
अरा हवाया जोईया, सुख पायो सब साथ ॥१॥

मुजरौ रावळ माल सू, वीरम दियो कराय ।
 माल कैयो इण मुलक मे, बसोखान थे आय ॥२॥
 दलो रहै दरवार मे, जोईयो आठू जाम ।
 जगा मझ भिडिया जवन, काढै मोटा काम ॥३॥
 तलवाडै थाणो तठै, पमग रहै सो पाच ।
 माल घणी घर मायनै आवण दिय न आच ॥४॥

(नीमाणी)

सिध दिली मुरताण री, फोजा चढ आई ।
 साँपो दलो जोईयो, भड सातू भाई ।
 वीरम बोचो वीरवर, वको वरदाई ।
 दू मायो, नह दू दलो, वर घर मिर जाई ।
 एण जगानी ऊपरा, कमरा बसवाई ।
 बीडगा चडिया वीरवर, समसर समाई ।
 केता दुसमण वाट कर, फोजा फिरदाई ।
 मीर केई रिण मारिया वीरम वरदाई ।
 आई न जोईया ऊपरै, तिल एक तवाई ॥

(ढाढी बहादर कृत नीसाणी सू)

भरवण

लोकगाथा

गति गगा, मति गरमती, मीता मीळ मुभाद ।
महिला सरहर मारुई, अवर न हूजी वाद ॥१॥

नमणी खमणी बहूगुणी, गुवोमळी जु सुवच्छ ।
गोरी गगा नीर ज्यू, मन गरवी, तन अच्छ ॥२॥

रूप अनूपम मारुवी, गुगुणी नयण सुवग ।
साधण इण परि राखिजद, जिम सिव-मसतर गय ॥३॥

गति गयद, जघ केळिप्रभ, केहरि जिम धटि लव ।
हीर डसण, विद्रम अघर, मारु-भूवुटि मयर ॥४॥

मारु देम उपनिया, ताहवा दत मुसेत ।
बूझ-वचा गोरगिया, खजर जेहा नेत ॥५॥

डोभू लक, मराळि गय, पिव-सर एही वाणि ।
डोला, एही मारुई, जेहा हस निवाणि ॥६॥

मारु-लव दुइ अगुळा, वर नितव उर मस ।
मल्हपद माश सहेलिया, मानसरोवर हस ॥७॥

चपावरणी नाक सळ, उर सुवग विचिहीण ।
मदिर बोली मारुवी, जाणि भणक्की बीण ॥८॥

आदीताहू ऊजळो, मारवणी मुख-त्रन्न ।
शीणा वषड पहिरणद, जाणि झण्ड सोत्रन्न ॥९॥

भमुहा उमरि सोहलो, परिठिउ जाणिव चण ।
डोला, एही मारुवी, नवनेही, नव रण ॥१०॥

मृगनयणी मृगपति मुखी, मृगमद तिलक निलाट ।
 मृगरिपु कटि सुदर वणी, मारु अइहइ घाट ॥११॥
 षळ भूरा, वन झखरा, नही मु चपउ जाइ ।
 गुणे मुगधी मारवी, महवी सह वणराइ ॥१२॥

सदेश

ढाढी, एक सदेसडउ, प्रीतम कहिया जाइ ।
 साधण बळि कुइला भई, भमम डढोळिसि आइ ॥१॥
 ढाढी, जे प्रीतम मिलइ, यू कहि दाखवियाह ।
 पजर नहि छइ प्राणियउ, था दिस झळ रहियाह ॥२॥
 ढाढी, जे राज्यद मिलइ, यू दाखविया जाइ ।
 जोवन हस्ती मद चट्टयउ, अकुम लइ घरि आइ ॥३॥
 ढाढी, एक सदेसडउ, कहि ढोला समझाइ ।
 जोवन आवउ फळि रह्यउ, साख न पावउ आइ ॥४॥
 ढाढी, जइ साहिब मिलइ, यू दाखविया जाइ ।
 जोवन वमल विवासियउ, भमर न चडमइ आइ ॥५॥
 ढाढी, एक सदेसडउ, ढोलइ लगि लइ जाइ ।
 वण पाकउ, करमण हुअउ, भोग लियउ घरि आइ ॥६॥
 पधी, एक सदेसडउ, लग ढोलइ पैहचाइ ।
 खिरह बाघ वनि तनि बसइ, सेहर गाजइ आइ ॥७॥
 पधी, एक सदेसडउ, लग ढोलइ पैहचाइ ।
 जोवन खीर-समुद्र हुइ, रतन ज काढइ आइ ॥८॥
 पधी, एक सदेसडउ, लग ढोलइ पैहचाइ ।
 जोवन जायइ प्राहुणउ, वेगइ रउ घर आइ ॥९॥
 फागुण मासि वसत रत, आयउ जउ न सुणेसि ।
 चाचरि कइ मिस खेलती, होळी झपावेसि ॥१०॥
 जउ साहिब तू नावियउ, मेहा पहलइ पूर ।
 विचइ वहेसी बाहळा, दूर स दूरे दूर ॥११॥
 जइ तू ढोला नावियउ, बाजळिया री तीज ।
 चमक मरेसी मारधी, देख खिवता बीज ॥१२॥

वहिलउ आए वल्लहा, नागर चतुर सुजाण ।
 तुझ विण घण विलखी फिरइ, गुण विण लाल कमाण ॥१३॥
 वासर चित्त न वीसरइ, निसि भरि अवर न कोइ ।
 जइ निद्रा भरि भोगवु, तउ मुपनतरि सोइ ॥१४॥
 भरइ, पळट्टइ, भी भरइ, भी भरि, भी पळटेइ ।
 ढाढी हाथ सदेसडा, घण विललती देइ ॥१५॥

(‘ढोला मारू रा दूहा’ सू)

ऊजळी

लोकगाथा

टोळी सू टळताह, हिरणा मन माठा हुवै ।
वाल्हा वीछडताह, जीणो विस विध, जेठवा ॥१॥

जातो जग ससार, दीम सारा नै दरस ।
भव-भव रो भरतार, जिकी न दीसै जेठवो ॥२॥

जळ पीधो जाडेह, पावामर रै पावटे ।
नैनधिये नाडेह, जीव न धापै, जेठवा ॥३॥

पावामर पैठेह, हसा भेळा ना हुआ ।
बुगला दिग बँठेह, जूण गमाई, जेठवा ॥४॥

जोडी जग मे दोय, चक्कै नै सारम तणी ।
तीजी मिली न कोय, जो-जो हारी, जेठवा ॥५॥

ताळा सजड जडेह, कूची ले वानै थयो ।
ऊषडसी आयेह, जडिया रहसी, जेठवा ॥६॥

तो बिन घडी न जाय, जमवारो विम जावसी ।
विलखतडी बीहाय, जोगण वरग्यो, जेठवा ॥७॥

चक्का सारस बाण, नारी-नेह तीनू निरख ।
जीणो मुसकल जाण, जोडी बिछड्या, जेठवा ॥८॥

जग दीम जाताह, वाता ए रहसी वळे ।
हित लेगो हाथाह, जीवण रो सुख, जेठवा ॥९॥

नैणा निजर निहार, तीन लोक देख्यो तुरत ।
अवळा रो आधार, जको न देख्यो, जेठवा ॥१०॥

सारस मरता सोय, सारमणी मरमी सही ।
 नाखीणी आ लोय, जग में रहसी, जेठवा ॥११॥
 धरती अम्बर धार, जळ बळ में रँवै जठै ।
 अबळा रो आघार, जोती फिरू में, जेठवा ॥१२॥
 आश्या उणियारोह, निपट नहीं न्यारो हुवै ।
 प्रीतम मो प्यारोह, जाती फिरू में, जेठवा ॥१३॥
 मोरा मन माणेह झड लोरा आवै जद्वै ।
 जिवडो मो जाणेह, जाळ विण दिस, जेठवा ॥१४॥
 बोयल वाळी कूब, सालै मो उर में सदा ।
 हिवडै हानै हूब, जग म मिलै न जेठवो ॥१५॥
 नैणा लागो नेह उर अतर माही बमै ।
 सजना साव सनेह, जुग म मिलै न जेठवा ॥१६॥
 पायासर री पाज, हसो हेरण हाविया ।
 बोय न सरियो वाज, जागा मूनी, जेठवा ॥१७॥
 तू पटथी पाताळ, ऊर्ची ख आकास लग ।
 पगय्यो वण पाताळ, जीव उठू, रे जेठवा ॥१८॥

(‘ऊजळी जेठवै रा सोरठा’ म्)

नारायण

अलूनाथ कविया

कवित्त (छप्पय)

गोपनार चितहरण, प्रेम लच्छणा समप्पण ।
कुजबिहारी त्रसण, रास ब्रदावन रच्चण ॥
गोवरघन ऊघरण, ग्राह मारण गज-तारण ।
जुरासिध सिसपाळ, भिडे भूभार उतारण ॥

जमलोक दरस्सण परहरण, भी भग्गी जीवण-मरण ।
ओ मत्त भलो निस दिन अलू, मिमर नाथ असरण-सरण ॥१॥

महाराज गजराज ग्राह, उग्रह्यी सनेही ।
करि आण्यो वयकुठि, दिव्य नारायण देही ॥
दधि भारथ कौरवा, अतर वेला उत्तारे ।
रीद्र दुजोवण सभा, लाज द्रोपदी वघारे ॥

सुदरसणा ससख गद्दा पदम, अबर पीत चियारि भुव ।
गोविंद वेग वाहर गरुड, हरि जगनाथ पुकार हुव ॥२॥

ब्रह्म वेद उच्चरैय, गीत तुवरू गावै ।
रमा अवसर रमै, वीण सरसत्ती वजावै ॥
सिव अवलोवण करै, इद्र सिर चम्मर ढाळै ।
व्यास उकति धरनवै, पाव गगा पट्टाळै ॥

ससि सोळ्ह कळा अम्रित खवै, सूरिज कोटि समधरै ।
अपरम्म तणा सिर ऊपरै, कमला थारत्ती करै ॥३॥

मोर मेर पर चुगै, चुगै पछी फळ तरवर ।
 गज वजळीवन चुगै, चुगै डिग हम सरव्वर ॥
 अनड चुगै आवास, चुगै पाताळ भुयगम ।
 बेहर वन मे चुगै, चुगै नित ठाण तुरगम ॥
 जीव ओ जतु सब ही चुगै, गाठै यहा गरत्य है ।
 चिन्ता म कर ना-चिन्त रह, देणहार समरत्य है ॥४॥

(सकलित)

एक बेलि तुवडी लग फळ तेय तिणिण घण ।
 जि किवि चढी घाणुकक हत्थि कड्ढति रहिर तन ॥
 जि किवि षढी शीवरह पिकिख तोडिय तुबाहळ ।
 ते तारहि सुरनदी नीर निज्जर खाळाहळ ॥
 सप्रही जि किवि गायण जणह, वीण नादि पुरति घण ।
 सधपत्ति राय डुगर कहइ, सगति सरिसा होहि गुण ॥५॥

गव्बु म करसि गवार, गव्व रावण रण खडिय ।
 गव्बु कियइ नरसिघ काज देवळ सिल भडिय ॥
 गव्बु कियइ गुण गळइ, गव्बु वीयउ भउ भजइ ।
 वडा वडी पिरथमी नद, वइ टवर वज्जइ ॥
 परहरहु गव्बु सज्जण सगल, गव्वि म कोइ होवइ अचळु ।
 थी सघ मिळहि डुगर कहइ, नवहु जेम तरवर सफळु ॥६॥^१

(‘डुगर वावनी’ सू)

१ ‘डुगर कहइ’ प्रयोग सू यो धम नी हुवनी चाहिजे के काव्य रो रचनाकार डुगरमी है। असल मे रचनाकार तो पदमनाम ही है पण सम्मान में वो आप रे आध्यदाता डुगरमी रे नाम रा प्रयोग कर दियो है। दूजा भी नई आपिन कवि दणी भांग रा प्रयोग कर्या है।

रातीवाहो

सूजो वीठू

(छद पाघडी)

बळिवन्ति जइति वावाडि बोलि,
ढोइया थाट बाजतइ ढोलि ।
आरभ राम जइतसी भक्ति,
आवियउ मीर सिरिआध रत्ति ॥३७२॥

राठउडि रेवन्त रघ,
विच्छूट जाणि सङ्कळी वग्घ ।
पतिसाह सेन हुअतइ पगेहि,
माथइ असि चाडिय मारुओहि ॥३७५॥

वरवोइय तेजी नाळि विज्ज,
भाइओ किया भेऊा भडिज्ज ।
सागुलइ राग बागा समोहि,
साखियउ तुरी सामहइ लोहि ॥३७६॥

सग्राम धीरि सामहइ सारि,
मेल्हियउ तुरी मोगर मझारि ।
जइतमी राइ मच्चाधि जग,
अम्मळीमाणि टाळिय न अग ॥३७७॥

रेवन्त घातियउ जइत राइ,
नवसहस धणी कन्नहू नियाइ ।
खेड रइ राइ खोहणि खधार,
ढोयउ सरूप वाजती धार ॥३७८॥

दळि दाणवि जइत सरूप दीठ,
नेठाहि धीरि नाखिय नित्रीठ ।
हिन्दुआ तुरवका हुविय हुक्क,
करिमाळ वाजि कळळिय कटक्क ॥३७९॥

पडियाळ घूणि पउरिस्ति पूरि,
गाजणइ तणइ पइठउ गरुरि ।
खुरिसाण विवाणे खेड खागि,
वाजिया घाउ ऊडी व्रजागि ॥३८०॥

खाफरा जइत वाहइ खडग,
वासदे जाणि वन्ने विलग ।
ऊतरा सेनि जइतउ अबीह,
सीघरे पईठउ जाणि सीह ॥३८१॥

कूभायळ भाजइ मीर कध,
ऊकुरड चडइ दळ अग्निबध ।
आवद्धि टोपि ऊमरी अग्नि,
खीटिया घाट बेवे खडग्नि ॥३८२॥

गहगहिय घाट बेऊ गरीठ,
राठउडि रउद्रि वाजियउ रीठ ।
सूरा सधीर वाजइ सरोस,
पडिकाळे ऊडइ जिरहपोस ॥३८३॥

राठउडा हाये रिम्म राह,
सघरइ मीर सहिता सनाह ।
जरदाउळि फूटइ सेल जीह,
अरि उरे अणी ठेलइ अबीह ॥३८४॥

घण घाइ मुगुल्ला घडिय घट्ट,
रहचिवा घट्ट हुइ आहरट्ट ।
सेलार सहइ सारीर सार,
भाले भभार पट्टे पहार ॥३८५॥

ताइया तणे वाजइ तियग,
ऊतरइ गात हुता अलग ।
राठउड विडइ रिणि रस्सलुद्ध,
सारे मुगुल्ल हुअइ विमुद्ध ॥३८६॥

(१८) - अइराक्कि, अणी पाया अठाहि,
मतवाळा घूमइ मीर माहि ।
वाहइ खडग बेमे विरत्त,
रिणटाह रत्त आवद्ध रत्त ॥३८७॥

रउद्र दळ रहृच्चइ जइत राउ,
 होहू कि मेह बाजइ हुलाउ ।
 ताइया उरे छइ कूत तेह,
 माळुअउ राउ मातउ कि मेह ॥३८८॥
 घडहडइ ढोल धूजइ धरत्ति,
 पडियाळगि वरसइ खेडपत्ति ।
 बीकाहर राजा इंद वग्गि,
 खाफरा सिरे खिबिया खडग्गि ॥३८९॥
 पतिसाह फउज फूटन्ति पाळि,
 ब्रह्मपण्ड जइत गाजइ विचाळि ।
 अम्बहर जइत वरसइ अवार,
 धुडकिया मोर नुहि खग्ग धार ॥३९०॥
 सार जळ मेछ नह सहइ सक्कि,
 वरिमाळ काह पडियउ कटक्कि ।
 धूधहर वरसता धन्न धन्न,
 गुरिजा निहाइ वाजइ गिगन्न ॥३९१॥
 खुरिसाण सीसि वाजइ खडग्ग,
 ऊमरइ बूर आकासि लग्ग ।
 वेढता विलम्बइ वात वार,
 घउसिया मोर मुहि खग्ग धार ॥३९२॥
 मरदिया जेम जगमल्ल मल्ल,
 ढढोळि ढल्ल मारिय मुगल्ल ।
 रळतळइ रत्त सोखइ सपत्त,
 समळइ सत्त विसयरइ वत्त ॥३९३॥
 सौराम जइत सारे निसग,
 लोहडे लसक्कर लियइ लक ।
 राठउइ राउ गळबळइ रोम,
 वावणउ विलागउ जाणि वोम ॥३९४॥

पद

मीराबाई

मनँ चाकर राखो जी, स्वाम मनँ चाकर राखो जी ॥ टेक ॥

चाकर रहसू, बाग लगासू, नित उठ दरसन पासू ।
विद्रावन की कुज-मळिन मे, गोविंद लीला गासू ॥
चाकरी मे दरसन पाऊ, मुमिरण पाऊ खरची ।
भाव-भगति जागीरी पाऊ, तीनू वाता सरसी ॥
मोर-मुकुट पीताम्बर सोहै, गळ बैजती माळा ।
विद्रावन मे घेन चरावै, मोहन मुरळी-वाळा ॥
हरे-हरे नित बाग लगाऊ, विच-विच राखू क्यारी ।
सावरिया का दरसन पाऊ, पहर कुसुभी मारी ॥
जोगी आया जोग करण कू, तप करणँ सन्यासी ।
हरी भजन कू साधु आया, विद्रावन का वासी ॥
मीरा के प्रभु गहिर गभीरा, सदा रहो जी धीरा ।
आधी रात प्रभु दरसन दीन्हे, प्रेम नदी के तीरा ॥

(२)

हे री मैं तो दरद दिवानी, म्हारो दरद न जाणँ बोय ॥ टेक ॥

घाइल की गति घाइल जाणँ, की जिण लाई होइ ।
जौहरि की गति जौहरि जाणँ, की जिण जौहरि होइ ॥
मूळी ऊपर सेज हमारी, किस विध सोवणा होइ ।
गगन मडळ पै सेज पिया की, किस विध मिलणा होइ ॥
दरद की मारी बन-बन डोलू, वंद मिल्या नहिँ कोइ ।
मीरा की प्रभु पीर मिटंगी, जद बंद सावरियो होइ ॥

(३)

मैं तो गिरधर के घर जाऊ ।
 गिरधर म्हारो साचो प्रीतम, देखत रूप लुभाऊ ॥
 रैन पडै तब ही उठि जाऊ, भोर भये उठि आऊ ।
 रैन दिना वा कै सग खेलू, ज्यू त्यू ताहि रिझाऊ ॥
 जो पहिरावै, सो ही पहिरू, जो देवै सो खाऊ ।
 मेरी उण की प्रीति पुराणी, उण विन पल न रहाऊ ॥
 जहा बैठावै तित ही बैठू, बेचै तो बिक जाऊ ।
 मोरा के प्रभु गिरधर नागर, वार-वार बलि जाऊ ॥

(४)

म्हारा ओळगिया घर आया ।
 तन की ताप मिटी सुख पाया, हिल-मिल मगळ गाया ॥
 धन की धुनि सुनि मोर मगन भया, यू मेरै आणद छाया ।
 मगन भई मिलि प्रभु अपणा सू, भौ का दरद मिटाया ॥
 चद कू देखि कमोदणि फूलै, हरख भया मेरी काया ।
 रग-रग सीतल भई मेरी मजनी, हरि मेरै महल सिघाया ॥
 सब भगतन का कारज कीना, सो ही प्रभु मैं पाया ।
 मोरा विरहणि सीतल होई, दुख-दुद दूरि नसाया ॥

(५)

मेरे तो गिरधर गोपाल, दू सरो न कोई ।
 जा के सीस मोर-मुकुट, मेरो पति सोई ॥
 छाडि दई कुळ की कानि, कहा करिहै कोई ।
 सतन दिग बैठि-बैठि, लोक लाज खोई ॥
 असुवन जळ सीचि-सीचि, प्रेम बेलि बोई ।
 अब तो बेलि फैलि गई, आणद-फळ होई ॥
 दूध की मयनिया बडै, प्रेम से बिलोई ।
 दधि मयि घृत काडि लियो, डारि दई छोई ॥
 भगति देखि राजी भई, जगत देखि रोई ।
 दासि मोरा लाल गिरधर, तारो अब मोही ॥

नृत्य-विलास

कुशळलाभ (वाचक)

कामकदळा नाटक करइ, माधव मनि अपछर सभरइ ।
आप पासि बइसारिउ भूपि, निरखइ कामकदळा रूपि ॥१६३॥
चपक वर्णं सकोमल अग, मस्तक वेणी जाणि भुयग ।
अघर रग परवाळी वेलि, गयवर हस हरावइ गेलि ॥१६४॥
नाक जिसी दीवा नी सिखी, दाहि रतन जडित बहिरखी ।
सीसफूल सोवन राखडी, कचनमय घडि रतने जडी ॥१६५॥
गळि एकाउळि नवसर हार, कवण नेउर रुणझुणकार ।
मुख जाणि पूनिम-नू चद, अघर वचन अमृतमय विद ॥१६६॥
पीन पयोधर कठिन उतग, लोचन जाणि तस्त कुरग ।
भालि तिलक, सिरि वेणीदड, भमह कक मनमय कोदड ॥१६७॥
कोमल सरल तरल अगुळी, दत जिस्या दाडिम नी कुळी ।
पळकइ घूडी सोवन वणी, सुद्रघटिका सोहामणी ॥१६८॥
केसरि सिंह जिस्यु कटि लव, रतनजडित कटि मेखल वक ।
जघ जुयल करि कदळी यम, अभिनव रूपिइ रमणी रम ॥१६९॥
भागद चदन केसर छोळि, अघर दसण रगित तबोळ ।
अजन-सिउ अजित आखडी, जाणि विक्च कमल पाखडी ॥२००॥
सग्या तेणि सोळह मिणगार, नाटिक अवसरि हरख अपार ।
ते माधव निरघइ वळि-थळि, लागउ प्रेम विरह व्याकुळी ॥२०१॥

(‘माधवानठ कामकदळा चउतई’ सू)

सती ऊमादे

आशानन्द बारहठ

रोपवि वाठ सुगध, अगर् चन्दण मळियागर ।
परमळ धूप कपूर, घिरत सीचै वैसन्नर ॥
मिळे फोड तेंतीस, मूर उच्चिन्नय साहे ।
करन वात अखियात, माल राजा पडगाहे ॥
सिस विम्ब जेम ऊमा सती, वमळ बसे सोळह कळा ।
गगेव राव, रावळ करण, आज करे बिहु ऊजळा ॥१॥

जेण लाज हम्मीर मुवो, जूझे रिणयभर ।
जेण लाज पातल्ल मुवो, पावागढ ऊपर ॥
जेण लाज चुडराज मुवो, नागोर तणे सिर ।
कान्हडदे जाळोर अनै, दूदो जेसलगिर ॥
बड घरा लाज राखण वडी, करण सधू खत्रवट करे ।
सो लाज काज ऊमा सती, मालराव कारण मरे ॥२॥

गुरड चढी गोविन्द, साढ चढ आवो सकर ।
इन्द्र चढी इणवार, पीठ एरावत मद्धर ॥
हस चढी मुर जरठ, चढी देवी सिघाणै ।
चढी मूर सपतास, चढी अपछरा विमाणै ॥
सापडे मूर मुख सामही, धुव जेही सार्चै धडै ।
सुर इता आज आवो सती, चढ आजस काठा चढै ॥३॥

सज सोळा सिणगार, सत्तव्रत अग अग साहे ।
अरक बार मुख ऊग, नीर गगाजळ नाहे ॥
धीर पहर, अस चढे, केस घेणी सिर खुल्ने ।
देती परदवखणा, हसगत राणी हल्ले ॥
मुर भुवण पैस पहुता सरग, साम तणो मन रजियो ।
रुसणो मालदे राव मू, भटियाणी इम भजियो ॥४॥

सार सचील सिनान, दान सोन्नन विप्रा दे ।
 धारे चित निज धर्म, पखा उजळा करे बे ॥
 मेट मोह मृतलोक, काठ भक्खण मझ पेसै ।
 महा झाळ मगाळ, माहि सिद्धासन बेसै ॥

कर वाळ दोष निकळक करण, तवजे तिण वारा तणो ।
 सुर-भुवन पधारे साम सू, राणी भागे रूसणो ॥५॥

बाघजी रा दूहा

कूकै कोयलियाह, मीठा बोलै मोरिया ।
 राचै रग रळियाह, बागा विच्चै, बाघजी ॥१॥
 कस्तूरी शखी भई, केसर घटियो आघ ।
 सब वस्तू सूधी घई, गयो बटाळ बाघ ॥२॥
 बाघा, आव वळेह, धर कोटडे तू धणी ।
 जासी फूल शडेह, वास न जासी बाघ री ॥३॥
 ठोड-ठोड पगदोड, करसा पेट ज कारणै ।
 रात दिवस राठोड, बीसरसा नह बाघ नै ॥४॥
 यडै मसाण थयाह, आतम पद पूगा अलख ।
 गगा हाड गयाह, बीसरसा जद बाघ नै ॥५॥
 हूक कळेजे माय, दाटां पण दूणी दगै ।
 धूधळिया घड माय, वरळा ऊठे, बाघजी ॥६॥
 हाल हिया सिव वाडिया, पग दे पावडियाह ।
 वार्धै सू वार्ता करा, गळ दे वाहडियाह ॥७॥

(सकलित)

हालां-झाला रा कुंडळिया

ईसरदास रोहड़िया

एकी लाखा आगमं, सीह कहीजं सोय ।
सूरा जेथी रोडिये, कळहळ तेथी होय ॥

कळळ हूकळ अदसि, खेति सूरा करे ।
धीरपं सुहड रिण, चलण धीरा धरं ॥
आगि ब्रज्जागि, जसवत अकळावणौ ।
खाग बळि एकलौ, लाख दळ खावणौ ॥१॥

सादूळी आपा समी, बियो न कोय गिणत ।
हाक विडाणी किम सहै, घण गाजिये मरत ॥

मरे घण गाजिये जिकी सादूळ महि ।
सत्रा चा ढोल सिर सकं किम जसो सहि ॥
वयण घण साभळं रहे किम बीसमौ ।
सुपह सादूळ कुणि गिणं आपा समी ॥२॥

सीहणि हेकी सीह जणि, छापरि मडे आळि ।
दूध विटाळण कापुरस, बोहळा जणं सियाळि ॥

घणा सियाळि जे जणं जबक घणा ।
ती हि नह पूजवे पाण केहरि तणा ॥
धूणि खग ऊठियो, अभग साम्हौ घणी ।
भीह जमवत जिसी, हेक जणि भीहणी ॥३॥

केहरि मरु कळाइया, रहिर ज रत्तडियाह ।
हेकणि हाथळ गै हणै, दत दुहत्या ज्याह ॥

दत दुहत्या ज्याह हाथिया सबळ दळ ।
आवधा हरहरा चूर करणौ अकळ ॥
रोळसी घळदळा चखा रातवरी ।
कळाया मरु त्या जसौ गज केहरी ॥४॥

केहरि ईम भमग मणि, सरणाई सुहडाह ।
 सती पयोहर ऋपण धन, पडसी हाथ मुवाह ॥
 मूवा हिज पडंसी हाथ भमग-मणि ।
 गहड सरणाइया ताहरै गँ डसणि ॥
 काळ ऊभौ जसौ सकं नेडा करी ।
 कुणि सती पयोहर मूछ ले केहरी ॥५॥

मरदा मरणी हवक है, ऊवरसी गल्लाह ।
 सापुरसा रा जीवणा, थोडा ही भल्लाह ॥
 भला थौड जीविया नाम राखँ भवा ।
 खेल ऊमा रवँ भागला सिर खवा ॥
 बळ चट्टै जोय चद जस नामौ करँ ।
 मरद साचा जिकँ आय अवसर मरँ ॥६॥

ब्रह्म-दर्शन

छतो थयो माहव, गूघट छोड ।
 ठयो तूँ ठावो ठाविय ठोड ॥
 मुणा किय जाग असी जगमूर ।
 नही जिअ माझ तुहारोय नूर ॥२६५॥

जळा-घळ थावर जगम जोय ।
 कियँ हरि, तूझ पखँ नही होय ॥
 मकोडिय कीट पतग मुणाळ ।
 भिखग तु हीज तु हीज भुआळ ॥२६६॥

सोहो भरपूर रह्यो घणसाम ।
 रमे घट माझ सदा तुहि राम ॥
 हरी तू वणाविय बाजिय हद्द ।
 बाजीगर तूझ वडो हि विहद्द ॥२६७॥

अछँ सब माझ तु आप अळूझ ।
 गोविंद, तुहाळ लघो हिव गूझ ॥
 मुक्द, म पैठ पडद्दा माय ।
 ठावो हो कीध सरब्बस ठाय ॥२६८॥

सबँ असथान हो देखत साइ ।
 माणस्ता देवत नागा माहि ॥

इडज्ज सिदज्ज जरा उदभिज्ज ।
माया सब तूझ न भूलव मुज्ज ॥२६६॥

सुरत्त तु हीज तु हीज सबद् ।
मरद् महैळिय माहि मरद् ॥
ऋतात तु ऋत्त-ऋडा तुहि काम ।
रमाड म पण लघो हिव राम ॥२७०॥

म राख पडहोय आडो मूझ ।
जिया निरखा तिथ दाखव तुझ ॥
विधोविध दीठी भाझ विभूत ।
धुताइय मूक् परी हिव धूत ॥२७१॥

प्रभु, तू पाणिय तू ज पवन्न ।
गरज्जत भोम पियाळ गगन्न ॥
इळा त्रय तू ज उडीयण अरुम ।
पुणगा मेघा माहि परम्भ ॥२७२॥

रमै तू राम जुवा धरि रग ।
तु हीज ममद तु हीज तरग ॥
अणु परमाणु तिहारो हि अस ।
हिवै म सताय छतो थइ हस ॥२७३॥

जड्यो हिव ओझळ छोड जिवन्न ।
पेखा तुव डाळाय माखा पन्न ॥
अजाण रि आगळ रे तु अजाण ।
जाणीता पाहि न अतर जाण ॥२७४॥

सगाड गळै जनि अतर लाय ।
वहेलो थाय नही सहबाय ॥
वसीकर सब्ब तुहाळो वेस ।
नही तू जेय स दाखव नेस ॥२७५॥

लख्यो हिव रूप प्रछन्न न लाय ।
भुरार, प्रतवख हि बाहर माय ॥
ठगारा ठाकर हेकट धीय ।
पडहो नाख परी हिव पीय ॥२७६॥

जोयो हो राम विमासिय जेम ।
 तना घट मा हरि, दीठउ तेम ॥
 गळी गयो धम्म छुटी मन गठ ।
 करो हरि, वात लगाडिय कठ ॥२७७॥

त्रिणो नह पेखा आडो तूझ ।
 मुखामुख सेव करडउ मूझ ॥
 त्रिभगिय, हेक हुआ हम-तम्म ।
 प्रपोटाय अब तणी परिप्रम्म ॥२७८॥

समाणोय तूझ महि घणसाम ।
 रघूवर, माहरी आतम राम ॥
 महारउ ठाकर वैठी माहि ।
 पुजावत आपहि आपहि पाहि ॥२७९॥

(‘हरिरस’ सू)

राव अमरसिंघ राठौर

केसौदास गाडण

(गीत)

गूदा मास रा गिळती रिण गटका, चळवै रगी मुचाळी ।
विच अवखास वहै वळवळती, अमर तणी अणियाळी ॥१॥
सुभियाणा खाना मुरताणा, घाटा भजण सारी ।
फोरी फिरै घणां फोडती, काठहडै ज कटारी ॥२॥
माल्हे गोसळतन खाना मझि, उर खणती अनवधा ।
जमदद तुझ तणी जोघपुरा, धड खणती धजवधा ॥३॥
विकराळी दरवार विचाळै, बरवरती वागाळा ।
मालहरा माल्हे प्रतियाळी, भखती लील भुवाळा ॥४॥
सोनहरी दीवाण दिलेसर, रायजादा हुई राजी ।
गजन-तणै गिळिया गजवधी, ऊप्रजती आ गाजी ॥५॥

बलूजी चांपावत

(गीत)

बिजड ऊठियो धूण गिरमेर री बहादर,
पळै म्है कदे अवसाण पावा ।
अमर नै सुरग दिस मेल नै एकली,
आगरे लडेवा कदे आवा ॥१॥
अम्हें तो अमर राजा तणा ऊमरा,
जुडेवा पार की छठी जागा ।
बोलियो बलू पतसाह रै बरोबर,
मारवै राव री बैर मागा ॥२॥
वेस्र्या माहि गरकाव बागी करे,
सेहरी बाघ हलवार साथै ।

अमर री भतीजी तोल खग आखवे,
 बलू अर आगरी हुवा बायँ ॥३॥
 पटा नै नाखि भिड साह नू चटापट,
 काम नवकोट साचो कमायो ।
 वादकर साह सू बैर नृप वोढियो,
 अमर नै मुहर करि सरग आयो ॥४॥

(सकलित)

नीसाणी

सूर विरत ससार सू, रत्ता रहमाणा ।
 काची माया कारणै, भ्रम मूढ भुलाणा ।
 विपया कामण कनक कँ, क्या लोभ लुभाणा ।
 मौनी गाफिल हुय रह्या, खूनी जुलमाणा ।
 काची काया भाजसी, बूडा कमठाणा ।
 साहिब नाम सभाळदै, क्या लगै नाणा ।
 जे सब वरसै जीवणा, दिन हेक पयाणा ।
 एम विचारी आतमा, परिहृयि विवाणा ।
 डोरी हाथ अलेख वँ, सोई सग वधाणा ।
 पूरणहारा पूरवै, दिन पाणी दाणा ।
 कायम आदम राखिया, क्या काम कमाणा ।
 इस उजूद मौजूद का, बैरी जमराणा ।
 मात पिता मुत भ्रात ही, कोई नहि अप्पाणा ।
 दुनिया सहू को पच दिन, आयँ महिमाणा ।
 खलक तमासा आविया, मिळि एह पयाणा ।
 सब भाये व्यापार कू, कुळ क्रम क्रियाणा ।
 हटवाडा ससार-दा, बाजार मडाणा ।
 एकै लाहा शीगुणा, एकै मूळ ठगाणा ।
 मूळ खजाना मेल्हिपा, खाना - मुळताणा ।
 कामण मूघा कप्यडा, कुजर बेवाणा ।
 देख तमासा डरपिया, बैई साध सयाणा ।
 मूरा-पूरा साधक्या, दिल ताक रखाणा ।
 जो दोन्हा मो ऊवर्मा, आदू औघाणा ।
 जिस हदै दस मीम थे, गया रावण राणा ।
 एको माई अप्पणा, और सब विद्याणा ॥१६॥

(‘नीसाणी विवेक दार’ सू)

बहलोलखां-वध

गोरधन बोगसो

(गीत)

गयद भान रै मुहर ऊभौ ह्वतौ दुरद गत,
सिलहपोसा तणा जूष साथै ।
तद बही रूक अणचूव पालल तणी,
गुगल बहलोलखा तणै माथै ॥१॥

तणै ध्रम ऊद असवार चेतक तणै,
घणै मगरूर बहरार घट की ।
आच रै जोर मिरजा तणै आछटी,
भाचरै चाचरै बीज भटकी ॥२॥

सूरतन रीझता भीजता सैलगुर,
पहा अन दीजता कदम पाछै ।
दात चढता जवन सीस पछटी दुजड,
तात सावण ज्यु ही गई ताछै ॥३॥

बीर अवसाण केवाण उजबक बहै,
राण ह्यवाह दुय राह रटियौ ।
कट झलम सीस बगतर बरग अग कटे,
कटे पाधर सुरग तुरग कटियौ ॥४॥

(सकलित)

प्रतापसिंह

—मालो सादू

(गीत)

मह लागी पाप अभनमा मोकळ,
पिड मदतार भेंटता पाप ।
आज हुआ निवळक अहाडा,
पेखें मुख ताहरी प्रताप ॥१॥

बढता बळजुग जोर बढती,
घणा असत जाचती घणी ।
मिळता समै राण मेवाडा,
टळियो प्राछत देह तणी ॥२॥

सग अतलोक भुणें सोसोदा,
पाप गया ऊजमै परा ।
होता भेंट समै राव हीद्र,
हुवा पवित सग्रामहरा ॥३॥

ईछे तूझ बमळ ऊदावत,
जनम तणी गो पाप जुवी ।
हेकण वार ऊजळा हीद्र,
हर मू जाण जुहार हुवी ॥४॥

(२)

सामो आविपी गुर साथ सहेलो, ऊच बहा ऊदाणा ॥
अबबर साह सरम अणमिळिया, राम कहै मिळ राणा ॥१॥
प्रमगुर बहै पघारो पातल, प्राज्ञा करण पवाडा ।
हेबैं सरम अमिळिया हीद्र, मो मू मिळ मेवाडा ॥२॥

नागद्रहा जिण सू नहँ भिडियो, रावळ राजा राया ।
तिण वज कोड लिया तेतीसा, थीरग मिळिया साया ॥३॥

एका कारज रहियो अळगौ, अकबर सरस अनैसो ।
बिसन भर्ण हद्र श्रह्य विचाळै, बीजा सागण बेसो ॥४॥

(सकलित)

महावीर कल्लाजी रायमलौत

—दूदो आशियो

कलो मरण-भगळीक करि, चढियो गढ समियाण ।
 अक्बर साह वखाणियो, राणा राणो-राण ॥
 राण वाखाणियो त्यार राईत नै ।
 दीपियो प्रवाडै घणा थोडै दिनै ॥
 भर्ण ससार राठीडु सावत भलौ ।
 करै मगळीक समियाण चढियो कलौ ॥१॥

थह समियाणो पाकडै, रोहो करै दुसल्ल ।
 नव ज कल्याणो नीसरै, माल-तणो एकल्ल ॥
 नव ज एकल्लमल कल्याणो नीसरै ।
 कविल वाराह गढ सबळ रोहो करै ॥
 नामियो नही आहेडिए नीकडै ।
 पाणचर राण समियाण थह पाकडै ॥२॥

थोट वळै रजनी गळै, अरि वरि धिखं अगार ।
 तूर सहे गढ गहमहे, तू वाछती स वार ॥
 वार तू वाछती तिका वाधाहरा ।
 ईखि धाराथ बळ पराक्रम आपरा ॥
 खेति चावी हुवं नही तोसू खळै ।
 थोट घळै करे चूफ चहुवं वळै ॥३॥

केहरी पाघरि पोढियो, पोहरा केन पढति ।
 हेकल सवघा ही हणै, से लखिण जागति ॥
 जानियो छरा ऊपाडि जोघण्पुरी ।
 पिमण घड सामहो सेल तो पाघरी ॥
 बाघियो नेति मिरि निहसि छावाळवी ।
 निहग लागो भलो सीह नैदाळवी ॥४॥

सीहा सत्य जोडियै, हत्या तणा बखाण ।
 कलौ फटक्कै घेरियो माण न छडे राण ॥
 माण छडे नही राण वेढीमणी ।
 घणै बोलावियो जोर दाखै घणौ ॥
 हणै मोताहळा कुत बे हत्यिया ।
 सीह पडिगाहियो नीकडू सत्यिया ॥५॥

कलौ अवेलो अरि घणा, आगै एकलमल्ल ।
 ऊमौ आगमिजै नही, सुरिताणा उरि सल्ल ॥
 साल सुरिताण तुडिताण रायमल सुतण ।
 मल्लहपियो क्रमै असमेध करतौ मरण ॥
 पळा मुहि राखिया साखियो अणखलौ ।
 कळह आधिमामणौ हुवौ एको कलौ ॥६॥

करि जमहर हरि भगति करि, समहर ग्रहि खग साक्षि ।
 कलौ भलौ अहित कारणै, वरि दुलद त्रिय काजि ॥
 काजि दुलह तरणि तिकरि साम्हे क्रमै ।
 गाज गढ वाजि रणतूर चहुवै प्रमै ॥
 थरकि उर कायरा नरा आतर धियो ।
 कलै जमहर जिगत पेखि मगळ कियो ॥७॥

राठवडा भड वकडौ, वयू पोड्यौ कलियाण ।
 राण कवल कय राखवा, सिर अप्पै समियाण ॥
 समपि समियाण सिर सटै सलखाहरा ।
 ऊजळा पूरवज किया सब आपरा ॥
 एम रिण जोधहर राय खेली अचड ।
 रिण पिलग पोडियो कलियाण राठवड ॥८॥

वैकुठ यिया वधामणा, नीधसिया नीसाण ।
 सिर अप्पै समियाण नै, रत्थै बैठौ राण ॥
 राण बैठौ रथे रभ पूगी रळी ।
 अमर आणदिया गूडीयू ऊछळी ॥
 तुड पाधारिये तुग रायमल तणा ।
 वाजि नीसाण वैकुठ वाधामणा ॥

रायसिंह कल्याणमलौत

रगरेलो (वीरदास वीठू)

(गीत)

पाताळ तठें बळि र्हण न पाऊ,
 रिघ माडे लग करण रहे ।
 मो भ्रतलोक राईसिध मारै,
 कठें र्हू हरि बळिड कहै ॥१॥

वीरोचद-मुत अहिपुर वारै,
 रविमुत तणौ अमरपुर राज ।
 निधि-दातार कसाढत नरपुर,
 अनत रौर गति बेहि आज ॥२॥

खण दियण पाताळ न राखै,
 वनक-व्रवण रूघो वविलास ।
 महि-भुडि गजदातार ज मारै,
 बिसन करै पुडि मांडू वास ॥३॥

नाग अमर नर भुवण निरघता,
 हेक ठौड छै, वहे हरि ।
 पर अरि रामसिध घातिया,
 कुरिद तठें जाइ वास करि ॥४॥

कमालखा (जालीर) व्याजस्तुति

बुट्टण तेरा बाप, जिक् सौरोही बुट्टी ।
 बुट्टण तेरा बाप, जिक् साहोरी बुट्टी ॥
 बुट्टण तेरा बाप, जिक् बायडगड बोया ।
 बुट्टण तेरा बाप, जिक् मूमडा घबोया ॥

कूटिया प्रसन खागा किता, झूझे अर सांवे धरा ।
मो कुट्टण न वह कमालखा, तू कुट्टण विणियागरा ॥

जैसलमेर रो जस (व्यंग्य)

राती रिढ घोहर मध्यम ऋख ।
भमै दृगपाळ मरता भध ॥
हचैरा तालर आवै हेर ।
मै दीठा जादव जयसलमेर ॥
टीकायत राणी गदा टोळ ।
हेकलि लायत नीर हिलोळ ॥
मुल्लक मझार न बोलै मोर ।
जरकूवा सेहा गोहा जोर ॥
ढबूरो बारठ डीली लाग ।
टहवकै दोना खोडी टाग ॥
गळ्योडी जाजम माह बगार ।
जुडे जहा रावळ रो दरवार ॥
कवीसर पारख ठोठ न कोय ।
हसत्तौ भंस बराबर होय ॥
परख्या ऊन बरोबर पाट ।
धिनो घर घाट, धिनो घर घाट ॥
पदम्मण पाणी जावत प्रात ।
रुळती आवत आधी रात ॥
बिलक्खा टाबर जौवं वाट ।
धिनो घर घाट, धिनो घर घाट ॥

(सकलित)

बादल री वीरता

—हेमरतन

एम सुणी राजा रंजीत,
हरप संपूरित हउ हीउ ।
कुसळे-खेमे पुहतउ माहि,
जाणिक सूरिज मुकीउ राहि ॥५७५॥

कुमळ तणा बाजा बाजिया,
तव ते सुभट सहू गाजिया ।
नीकळिया नवहत्या जोघ,
वड दूसासण वहइ विरोध ॥५७६॥

सामि-शामि समरथ अति मूर,
गोरउ रावत अतिहि करूर ।
अरि-दंड देखी अति ऊमसइ,
सुभट सहू मन माहे हसइ ॥५७७॥

सूरिम मगळड तनि ऊळळी,
मोहइ सुभट तणी मडळी ।
साना पहिर्या सुषट सनाह,
रुक हत्या दोसइ रिम राह ॥५७८॥

चारि महस नोसरिया मूर,
एक-एक थी अधिक करूर ।
भागळि गोरउ बाडिळ बेउ,
पूठई शाल्या सुभट सवेउ ॥५७९॥

घाघरटइ दीसइ भट घणा,
 पार न लाभइ पुरसा तणा ।
 वूट्या धाया ले तरवारि,
 हलकारे लाग़ा हलकार ॥१८०॥

“रे रे आलिम, ऊभउ रहे,
 हिव नासी मत जाइ वहे ।
 पदमिणि आणी छइ अम्हि जिका,
 तोनइ हिवइ दिखाडा तिका ॥१८१॥

तोनइ खाति अछइ अति घणी,
 अम्ह ऊभा ते देवा तणी ।
 हठीउ छइ तउ करि हथियार,
 हिव आलिम मनि हुइ हुसियार” ॥१८२॥

एम कही नइ आव्या जिमइ,
 दीठा आलम अरियण तिसइ ।
 रणरसीउ ऊठिउ रिम राह,
 विणठी वात करइ पतिसाह ॥१८३॥

“रे रे कूड कीउ वादिळइ,
 आवउ सुभट सहू हिव किलइ ।”
 हलकार्या असपति निज जोध,
 धाया किलली करता क्रोध ॥१८४॥

माहोमहि मडाणउ किलउ,
 बडवी बोलइ इम वादिळउ ।
 “पातिसाह, मति छडइ पाउ,
 जउ तु अधिरु अछइ रणराउ ॥१८५॥

तु आयउ डीनी-थी घसी,
 हिव मत जाई पाछउ खिसी ।
 मूर अछइ तउ करि सग्राम,
 नहि तरि रहसी नहि तुअ माम” ॥१८६॥

आलिम ना घडिया असवार,
जिम-दळ सरिखा जोध झुझार।
भिडइ भली परि भारत भीम,
सुभट न चापइ पाछी सीम ॥५८७॥

घसबस धूळि विघूसइ घरा,
माहोमाहि भिडइ आकरा।
खेहा डवर ऊडिउ खरउ,
सूझइ सूर नही पाघरउ ॥५८८॥

चाण विछूटई बिहु दिसि घणा,
बाजइ लोह घणा साधिणा।
खडग विछूटइ करता खोज,
जाणि कि बादळि झबकइ बीज ॥५८९॥

सन्नाहे तूटइ तरवारि,
तिणगा ऊडइ अधिक अपार।
अग्नि-झाल झळकइ असि धार,
घण जिमि हूउ घोर अघार ॥५९०॥

खळक्या खळहळ लोही खाळ,
पाचस जेमि बहइ परनाळ।
रज रुघाणी घणउ प्रगास,
गिरझणी मस तणा ले प्रास ॥५९१॥

पूरइ पत्र रुहिर जोगिणी,
मुण्डमाळ ले ईसर घणी।
झडवड झडप भरइ सीघाण,
अवर जोवइ अमर विमाण ॥५९२॥

सूरिज निज रथ खची रहइ,
रगति-विगति नवि काई लहइ।
इणि अवसरि गोरउ गजगाहि,
घाई आविउ जिहा पतिसाह ॥५९३॥

/ प्राचीन राजस्थानी काव्य

मेलह्यउ खडग महाबळि जिसइ,
असपति अळगउ नाठउ तिसइ ।
बोलइ बादिळ बे कर जोडि,
“नासता मार्या छइ खोडि” ॥५६४॥

रतनसेन राजा अति भळउ,
गढ ऊपर-थी देखइ किलउ ।
जोवइ बादिळ गोरा तणा,
हाथ महाबळ अरि-गजणा ॥५६५॥

पदमिणि ऊभी छइ आसीस,
“जीवे बादिळ कोडि बरीस ।
धन्य-धन्य बळिहारी तूझ,
तइ मुझ राखिउ सगलु गूझ” ॥५६६॥

(‘पदमिनी चउपई’ सू)

वीसूजी (दुर्गा) की स्तुति

—हेम कवि

निळटइ दीपं नूर, तेज तपं तनि तो तणं ।
सहस्र कै ऊगा सूर, वदनि तिहारै, वीसहसि ॥१॥

टळवळता छइ टेक, भावठ भाजै भगवती ।
ऊची आस अनेक, वहिली पूरै वीसहसि ॥२॥

ठोड नही तो ठाम, जिहा नही तू जाळपा ।
नवा-नवा करि नाम, वसै सदा तू, वीसहसि ॥३॥

डमरू टाक डमाल, घणे घमते घूपरे ।
फिरि-फिरि भरती फाल, बाध चढणितू, वीसहसि ॥४॥

डमकते डोलेह, घणे दमामे घूमते ।
वरवते बोलेह, वेडी बक सू वीसहसि ॥५॥

नयणे निद्रा रूप, वाचा रूपा वयण तू ।
पिड-पिड पवन सरूप, वपि-वपि दीसई, वीसहसि ॥६॥

तरण तुहारो तेज, ससि जिम सीतळ सेवका ।
हितुया दाखै हेज, विना बहुता वीसहसि ॥७॥

धिर भीषा तै धान, महल महागिरि मदरे ।
गिणी न आवै ग्यान, वसति तुहारी वीसहसि ॥८॥

देवी तो दरवार, सुर ऊभा सेवा करै ।
देखण तो दीदार, वारू मार्ग, वीसहसि ॥९॥

घरं हियं तो ध्यान, एक-मनां जो उळगै ।
मीहर्षित दे बहु मान, वचन फळै त्या, वीसहसि ॥१०॥

रसणि वरुं रस रग, वचित वहापै वसियणा ।
आई तू उछरण, वाणी रूपे, वीसहसि ॥११॥

लामा भेटै लेख, भला करै तू भगवती ।
 राखै भगता रेख, धान वघारै, वीसहयि ॥१२॥
 वदन सुधारस वाधि, नेह सरोवर नयण तो ।
 बाहा ग्रहे बोलाधि, वयण अमीरस, वीसहयि ॥१३॥
 सरण हिमै तो सेव, माता हू मूरू नही ।
 हित सू सामणि हेव, वासै करि दे, वीसहयि ॥१४॥

(‘बीसूजी री बावनी’ सू)

जयमल्ल

— ईसरदास रतनू

चित्रकूट ऊपरे, मिळे पतसाह तणा दळ ।
कासमीर कामरू, गौड बगाल अचामळ ॥
खेखनाज खघार, धार आरब घोळ्यागिर ।
हज हरेव हुरमञ्ज, सर्ज एराव तणा सिर ॥

उत्तरापथ पूरव छिटे, खडे खड खुरसाण रा ।
भीर सो चडे मेवाड दिसि, खडे पयाणे पदरा ॥१॥

पातसाह छेलियो, पूर चतुरग प्रगट्टे ।
चित्रकूट चड चोट, थट्ट अचियट्ट निहट्टे ॥
धरा धुज धमधमे, द्रमे पायाळ द्रमके ।
गोम बोम धूधळे, मेर गिर मेर सळवके ॥

वायरा नरा उर कदरे, भार कध कूरम भमे ।
भूगले कियो मिळि मारके, गिरद पेच चौही गमे ॥२॥

झुझा रण झोटके, ताम जंमल्ल प्रभाणे ।
हूदो सारी दूठ, दळे देसे दीवाणे ॥
मैं धीरे भीर जो, देस अहिपुर दौदट्टे ।
मैं पट हय पाडिया, धार फौजा घोसट्टे ॥

आंजसहि कमध मो ऊजळा, सार पाण सूरु सजे ।
मो भुजे साज मेवाड री, चित्रकूट म्हारे भुजे ॥३॥

जतु मांगी जैमान, खरा द्रव साय खजीणा ।
ताज मुत्तह जर थमळ, सास तेजी साखीणा ॥
अट्टेपूर मेडनो, वळे वधनीर विगती ।
सौ सोभरि चाटमू, गगह मिधुरा महती ॥

ऊयरा वाह आत्म बहै, ताइ न मेटी वाच मैं ।
म म शालि अट्टप जिन माडि मा, मानि साच गड देह मैं ॥४॥

ज्यों कान्हडि, जाळोर, दीघ जदि साको रवखै ।
 दूदै जैसलमेर, दीघ जो हीण न दख्यै ॥
 ज्यो हमीर रणधभि, जुडे जीतो जगि जाणै ।
 सोम मडोवरि जेम, कियो सानलि समिषाणै ॥
 तिम बरिस सरिस पतमाह तो, खाग सार खरो परो ।
 नहँ मनो सील न दिष्यो दुरग, बदे माल वीरम्म रो ॥५॥

खोदाळम खीजियो, धरे कर भूछ करारी ।
 असख खान ऊमरा, हुए आइस हलकारी ॥
 कुहक बाण केवाण, धार आरण घमचक ।
 द्रोह छोह दमदमा, तान आफाल मंडे तक ॥
 साबाति मुरगा सीधडा, जोवै रिख नारद जिमी ।
 हिन्दुवा अने तुरका हुवे, आवरत मा १ यसौ ॥६॥

ईसर नै जयमाल, पनै मलहै प्रोचाले ।
 करमचद रूपसो, ढाल ढाहण डेचाले ॥
 भावीजे भाईये, मूर धीरे स-मनाहे ।
 रजपूते राउते, रुक हत्थे रिम राहे ॥
 हाकळे आप धीसे हुआ, गुडे रीद्र हो एग रे ।
 मारके भुरज मालाहरे, जडण जोघ जैमाल रे ॥७॥

आभ लग रिण बग, कियै कर खग करारै ।

दियै धार पाहार, सार सेलार सघारै ॥

भरे बत्थ समत्थ, करै खलखट्ट निहट्टी ।

रुक झट्ट खलवट्ट, हुवै थट्टा आवट्टी ॥

ठछळै जीव जळ तीछतै, तडफड घड भड माछतिम ।

जैमान करै चित्तीड सिरि, रामायण हणमत जिम ॥१०॥

घाट वराड अनाड, सारि अरिडि पच्छाडे ।

करड दत बळवत अत जीतै अक्खाडे ॥

लोचनै आरत्त, दत निय भत झिखते ।

हसै धसै ऊससै, सार पाहार वणते ॥

रिम राह धीर वीरम्म री, हणे घणा भड हायळै ।

जैमाल मरै अक्कह करै, खळा लाख सीके खळै ॥११॥

हो देवा दाणवा, नाग मडळ नागिद्रा ।

राऊना राउळा, राउ राणा राजिद्रा ॥

सूर चद साखिया, तबौ कवी नारद तारा ।

पीरा पैकबरा, जखख सेखा जड धारा ॥

खुरसाण घणी सो रण खळै, सुणौ कनि मानो सही ।

हणि थट्ट कीध दूदाहरा, किमहि एम कीधो कही ॥१२॥

(सकलित)

गीत

आया दळ सबळ सामहो आवै,
 रगियो खग खन्नवाट रतो ।
 ओ नरनाह नमो नहँ आवै,
 पतमाहण दरगाह पतो ॥१॥

दाटक अनड दड नहँ दीधो,
 द्योयण घड सिर दाव दियो ।
 मेळ न कियो जाय विच महला,
 केळपुरै खग मळ कियो ॥२॥

असपत इन्द्र अवनि आहडिया,
 धाग झडिया सहै घका ।
 घण पडिया साकडिया घडिया,
 ना धीहडिया पढी नवा ॥३॥

आखी अणी रहै ऊदावत
 साखी आलम बलम मुणो ।
 राणो अक्बर चार राखियो,
 पातल हिंदू धरम पणो ॥४॥

(सकलित)

प्रभात

—पृथ्वीराज राठीइ

गत-प्रभा थियउ ससि रयणि गळती,
वर मदा सइ-वदन वरि ।
दीपक परजळतउ-इ न दीपइ,
नाम फरिम सूरतन नरि ॥१७६॥

मेली तदि साध्र सु रमण कोक मनि,
रमण कोक मनि साध्र रही ।
फूने छडी वास प्रफूले,
ग्रहणे सीतळताइ ग्रही ॥१८०॥

घुनि उठी अनाहत सख-भेरि-घुनि,
अरुणोदय चिय जोग-अभ्यास ।
माया पटळ निसा-मय भजे,
प्राणायामे जोति-प्रवास ॥१८१॥

सजोगिणि-चीर, रई, कंरव-स्त्री,
घर हट-ताळ, भमर गउ-धोख ।
दिणपरि ऊगि एतळा दीघउ,
मोखिया वघ, वधिया मोख ॥१८२॥

वाणिजू-वधू, गउ-वाछ, असइ-विट,
चोर, चवच, विप्र-सीरयवेळ ।
सूरि प्रगटि एतळा समपियउ,
मिळिया विरह, विरहिया मेळ ॥१८३॥

(‘त्रिसन-रुक्मणी री वेलि’ सू)

सीताहरण

—माधोदास दधवाडियो

दह दिसि लखमण देखि, एह सगर भाग्यं असुभ ।
सीता राम सपेखि, असुरे हरी काइ आचरी ॥१॥

भै आतुर सभाइ, नेटै जाइ जोयो निकुज ।
अजे न साम्ही आइ, हाइ लखमण लखमी हरी ॥२॥

लखमण सूना झूपडा, सीता-चोर पइट्ट ।
बळि घण दीसै नाह विण, घण विण नाह म दिट्ट ॥३॥

तरि-तरि पेखि म कळिपतरि, सरि सरि हस म सोशि ।
कुसळि न लखमण जानकी, नडि-नडि विहडि म खोजि ॥४॥

भणि-भणि सीत सुभाम, वनि-वनि खिणि-खिणि बिचरता ।
व्यापी राम विराम, जळि तोळै थळि माछ जिम ॥५॥

तरु बोले पिक ताइ, वारि लखण राघव वदै ।
आ कोकिला उडाइ, सीता सरि सालै सबद ॥६॥

जीव पराक्रम जेम, किसी सोग राघव करी ।
अखिल भुवनपति एम, काइ कळपी लखमण कहै ॥७॥

बळि तो राम दुबाह, जो ये कळिचाली जिती ।
सु ज त्रिभुवन सीताह, काढौ खणि लखमण कहै ॥८॥

एह दहकध सु अध, महा जोध मारीच म्रघ ।
बळ दाखवि वळिबध, दाणव छेतारिया दइव ॥९॥

ताम कसे कटि तूण, धारै भुजि वामे घनख ।
दुर्व पराक्रम दूण, साचरिया वाहर सती ॥१०॥

सुंदरि सोझनाहू, वाहूवा रघुवसिया ।
वनि लाधा बहताहू, भागा छत्र रथ घज भिडज ॥११॥

चाचा चूर धियाहू, पडिया दळ तडळ पगा ।
पाखा पीजरियाहू, अत वेडा आया अनंत ॥१२॥

रळती वाखर रग, गोदि लियो राघव गिरध ।
जीतौ तू रण जग, बाधि समो दसरथ-अनुज ॥१३॥

मुख जिन देखी मोर, सास-थके गयो लकसुर ।
जौवणवत सजोर, त्रिघ मो वधि ले गयो वधू ॥१४॥

रीझे त्रिघ रुघराइ, सुरां निधि दसरथ-सखा ।
जण वड्कुठ जटाइ, पुहचायो वैकुण्ठपति ॥१५॥

(‘राम रासौ’ सू)

वाल-गोपाल

—सांयो झूलो

भर्या माग सिद्धर मारग्न भाळें ।
वहै सामलो ब्रज्ज सेरी विचाळें ॥
वहै लार सव्वार पिडार वाळें ।
नवा नेह स तेह गोपी निहाळें ॥४॥

हरी हो, हरी हो, हरी घेन हाकें ।
झरुखा चढी नदकुम्मार झाकें ॥
अहीराणिया अब्वला झूल आवें ।
भगव्वान नै घेन गोप्या भळावें ॥५॥

इकी देवटी चोवटें आय ऊभी ।
सभाळी लियो स्पाम मोरी सुरम्भी ॥
हुई नद री घेन स घेन हेळा ।
भिळें वाहळा जाणि श्रीगग भेळा ॥६॥

पुळी नैर नीसार आवी प्रहट्टें ।
त्रिवेणी उळट्टीय समद्र तट्टें ॥
महककत सौंधा तणी सौड मार्यें ।
हरी मजरी तिल्लक वेण हार्यें ॥७॥

वई वासळी सिंगळी नाद वाता ।
गळें माळ गुजा ब्रज बाळ गाता ॥
सवै आमला-सामला प्रत्यसदा ।
जमूना तणी तीर आहीर जदा ॥८॥

- रमेवा सबै मय सू हेव रागै ।
 कहै कीजियै वान्हू भीरु विभागै ॥
 बईकुठ रो नाथ रुडी विचारी ।
 किया सारखा लोक बेटू किनारी ॥६॥
- पख-पार पिडार घा दोहू पासै ।
 लिया लकडी कध ऊभा हुलासै ।
 घडूनेडियै गेद मैदान घेरी ।
 घणो धूमरे डवरै घेर घेरी ॥१०॥
- झिलै आवता ऊलटै हेक क्षेरे ।
 फिरो राम चोटा कही दोट फेरै ।
 मझी आकरो माझियो खेल मातो ।
 रमै सग गोवाळिया रम-रातो ॥११॥
- मिळै चोट सामो मभी दोट माथै ।
 हुई दुह मल्ला तणी हेन हाथै ॥
 चढावै घणू साकडै तीर चाडै ।
 जमूना तणी नाखियो नीर जाडै ॥१२॥
- दडी लार कान्हो चढ्यो वच्छ डाळी ।
 भरी क्षप काळीद्रहै नाग-वाळी ॥
 काळीनाग रा कान्ह सभाळ केवा ।
 लधी जाण तूट्यो दधी मच्छ लेवा ॥१३॥
- मड्यो दूसरो खेल खेलत माथे ।
 हिवै ऊतरी वात गोवाळ हाथै ॥
 करै श्रीण खडो नमतेय कान्हा ।
 जोबै धेन घट्टीक काठै जमन्ना ॥१४॥

सवद-वाणी

—काजी महमद

ये दुनिया कोई धिर नहीं, चित चेत हिया रे ।
नही धिर अम्बर भेदनी, ससि सूरज तारे ॥१॥

छन मघासन पोहत, समर तेसे साजे ।
है गै पार न पावही, प्रथवीपति राजे ॥२॥

जिनको सब कोई मानते, सिर छत्र धराते ।
वै भी खानी हाथ ले, मैं देखे जाते ॥३॥

जिनके मंदिर-माळिया, कोडीघज होते ।
गलम विछाय पोडते, जगळि जाइ सूते ॥४॥

वै तन गळि माटी हुवा, कोई कहै न सारा ।
उस माटी का हे सखी, घट घडे कुम्हारा ॥५॥

जा घर माहै बैमत, हसि करते बाता ।
मन की रळिया मानते, जोबन भर जाता ॥६॥

वै धर पर पैधर हुवा, कोई कहै न ठाटा ।
ळठे माजन हे सखी, चलि अपनी वाटा ॥७॥

जा वन सारस कुरळते, जहा सीतल छाहा ।
जा सर बबळ विगासते, निरमळ जळ माहा ॥८॥

जा सरहस पुकारते, निरमळ जळ जेहा ।
सो सर मूके थळ चढे, उहा उडीहै लेहा ॥९॥

जा वन मृघा कुरटते, वेली रस खाहा ।
जा वन चदन महकते, भार अठारै माहा ॥१०॥

जा वन कोइल कूकने, दसहू दिस ठाहा ।
वै वन सूके प्रळे गय, वै कोकल काहा ॥११॥

काजी महमुद फनाफनी, चित चेतो भाया ।
 आज है सो काल्हि नही, जग फिरती छाया ॥१२॥
 इस दुनिया बाजार मे, सब सौदे आया ।
 किनही ने तो विणजिया, किन मूळ नसाया ॥१३॥

(२)

इन आगणडै हे सखी, कई खेलण आये ।
 इक खेल्या, इक खेलिही, इक खेलि सिघाये ॥टेक॥
 सामू दिया सिर घड़ा, आपण दुख रोई ।
 पय निहारौ पीव का, मेरै सग न बोई ॥१॥
 एक अधारी कोहड़ी, दूजी नेजु छोटी ।
 नैन हमारै यो झरै, जैसे गागर फूटी ॥२॥
 आवो मिलो सहेलियो, मीठ मेरा चोळा ।
 मैं गदी आगण भरी, मेरा साहिव भोळा ॥३॥
 दुख आमो मोचियो, दिन रैनि सवाई ।
 माळी कटिया ले गयो, हम खबरि न पाई ॥४॥
 आन उनारे बह तळे, सगी बौळायै ।
 तुम जावों सगी घर आपरै, हम होइ चुके पराये ॥५॥
 काजी महमुद यू कहै, जुग नाही रहणा ।
 बाह पकडि पीव ले चली, क्या उत्तर दीणा ॥६॥

(३)

मंगळ म्हारी पाहुणहो पग्देमी हे ।
 आजि काल्हि चनेमी हे ॥टेक॥
 कष्ट चरत न चिना कीना हे ।
 कष्ट मबडि मायि न लीता हे ।
 तानं उटि कया है गीना हे ॥१॥
 वै तो जगडि जाद बमेमि हे ।
 वै दुख कुण मू कहेसि हे ।
 सब ब्रिहनि मूणि मरेमि हे ॥२॥

सबद-वाणी

—काजी महमद

ये दुनिया कोई धिर नहीं, चित चेत हिया रे ।
नही धिर अम्बर मेदनी, ससि सूरज तारे ॥१॥

छत्र मघासन पोढते, समर तेसे साजे ।
है गै पार न पावही, प्रथवीपति राजे ॥२॥

जिनकी सब कोई मानते, सिर छत्र धराते ।
वै भी खानी हाथ ले, मैं देखे जाते ॥३॥

जिनके मदिर-माळिया, कोडीघज हूते ।
गलम बिछाय पोडते, जगळि जाइ सूते ॥४॥

वै तन गळि माटी हुवा, कोई कहै न सारा ।
उसमाटी का हे सखी, घट घडे कुम्हारा ॥५॥

जा घर माहे बैमते, हसि करते बाता ।
मन की रळिया मानते, जोबन भर जाता ॥६॥

वै घर पर पैवर हुवा, कोई कहै न ठाटा ।
ऊठे साजन हे सखी, चलि अपनी वाटा ॥७॥

जा बन साग्म कुरळते, जहा सीतल छाहा ।
जा सरकवळ विगासते, निरमळ जळ माहा ॥८॥

जा सरहस पुकारते, निरमळ जळ जेहा ।
सो सर सूके, थळ चढे, उहां उडीहै खेहा ॥९॥

जा बन मृधा कुरळते, बेली रस खाहा ।
जा बन चदन महकते भार अठारै माहा ॥१०॥

जा बन कोइल कूकने, दसहू दिस ठाहा ।
वै बन मूकै प्रळै गये, वै कोकल काहा ॥११॥

काजी महमुद फनाफनी, चित्त धेतो भाया ।
 आज है सो काल्हि नही, जग फिरती छाया ॥१२॥
 इस दुनिया बाजार मे, सब सौदे आया ।
 किनही ने तो विणजिया, किन मूळ नसाया ॥१३॥

(२)

इन आगणडै हे सखी, कई खेलण आये ।
 इक् खेल्या, इक् खेलिही, इक् खेलि सिघाये ॥टेक॥
 सामू दिया सिर घडा, आपण दुख रोई ।
 पय निहारौ पीव वा, भेरै सग न बोई ॥१॥
 एक अघारी कोहडी, दूजी नेजु छोटी ।
 नैन हमारै यो झरै, जैसे गागर फूटी ॥२॥
 आवो मित्रो सहेलियो, सोउ मेरा चोळा ।
 मै गदी ओगण भरी, मेरा माहिब भोळा ॥३॥
 दुख आमो सीचियो, दिन रैनि सवाई ।
 माळी कळिया ले गयो, हम खबरि न पाई ॥४॥
 आन उत्तारे बड तळे, सगी बौळाय ।
 तुम आवो सगी घर आपरै, हम होइ धुवे पराये ॥५॥
 काजी महमुद यू कहे, जुग नाही रहणा ।
 बाह पकडि पीव ले चलयो, क्या उत्तर दीणा ॥६॥

(३)

भैणळ म्हारी पाहुणडो परदेसी हे ।
 आजि काल्हि चलेसी हे ॥टेक॥
 कछु चलत न चिता कीता हे ।
 कछु सबळि साथि न लीता हे ।
 तान ऊठि चल्या है रीता हे ॥१॥
 वै तो जगळि जाइ बसेसि हे ।
 वै दुख कुण सू बहेसि हे ।
 तव त्रिहनि मूरि मरेसि हे ॥२॥

मैं तो सारी प्रियमी जोई हे ।
मुझ भीत न मिलिया कोई हे ।
हू विलखी होइ-होइ रोई हे ॥३॥

काजी महमुद दिल मे भाखै हे ।
कोई चित सईया पर राखै हे ।
मेरो जीव वसै उन पाखै हे ॥४॥

(संकलित)

सीता-रावण संवाद

—समयसुन्दर (महोपाध्याय)

हिव सीता रोती थकी, रावण राखइ एम ।
मारग मइ जोतो थको, मधुर वचन धरि प्रेम ॥१॥
कामी रावण इम कहइ, सुणि सुदरि सुजगीस ।
बीजा नामइ एक सिर, हू नामु दस सीस ॥२॥
मुकि सोग तु सर्वथा, आणि तु मन उल्हास ।
साम्हो जोइनि राग तू, हु तुझ किवर दास ॥३॥
का बोलइ नहि कामिनी, छइ मुझको आदेस ।
साम्हो जोइ सभागिणी, मुझ मन अति अदेस ॥४॥
जउ तु हसि बोलइ नही, तो पणि करि एक काम ।
दे निज चरण प्रहार तू, मुझ तन आवई ठाम ॥५॥
सीता सुदरि देखि तू, पृथिवी समुद्रा सीम ।
तेहनो हु अधिराजियो, भाजू दुरजण भीम ॥६॥
राजरिद्धि अति रूयडी, तू भोगवि भरपूर ।
इद्र इद्राणीनी परइ, पणि मुझ बछित पूरि ॥७॥
इम वेखाम घणा किया, रावण कामी राय ।
सीता उपराठी रही, कहइ कोपातुर थाय ॥८॥
हा हताम, हा पापमति, हा निरलज, निरभाग ।
पर-रमणी बाछइ जिको, त तो काळो काग ॥९॥
आज पछी मुझ एहवी, मत कहइ वात सपाप ।
का मइनो करइ वस नइ, का लाजविइ मा-वाप ॥१०॥
नरग पडइ का वापडा, काइ लगाइइ खोडि ।
रावण हुयो कुशीलियो, बहिस्यइ कवियण कोडि ॥११॥
का तू परणा आपणी, छोडि कुळीनी नारि ।
परणा बाछइ पारकी, भूरख हियइ विचारि ॥१२॥

(‘सीताराम चौपाई’ सू)

राणा प्रतापसिंह

—जाडो मेहडू

(गीत)

हठमल्ल माझी हीदूवाणें,
ताईया सों मूछ ताणें,
जगत सोह जग जेठ जाणें,
इमो राणो आप ।
हेक ताई कुळवाट हालें,
भिडण वाधें नेत भालें,
साह अकवर हीयें सालें,
तूस तेग प्रताप ॥१॥

राशहरा अति रूप राखें,
दुजड मेछा मार दाखें,
पुळे जाए खता पाखें,
पेखि माण प्रमाण ।
भिडें रिणि गज-थाट भानें,
विदण चाडें सिध वानें,
मीर साची जोर मानें,
खाप तो खूमाण ॥२॥

खत्र घणी खत्रवाट खेले,
थाट जोगणिपुरा ठेले,
शूंस भुज्जा प्राणि झेले,
विडे जूह विडार ।
राण रिणि जयधम रोपें,
बुभ करिब हणें कोपें,
सीह नह पतसाह लोपें,
मीघ सभव सार ॥३॥

(‘जाडा मेहडू, गृथावली’ सू)

कुवर रामसिंघ (आमेर)

—नरहरिदास

गीत

सरप दाह जनमेजय पतिसाह झालण सिवो,
प्रथीपत विन्हे हठि पडै अणपार ।
सरणि साधार खदभार घरिया समह,
आसतीक जेमि थियै राम आघार ॥१॥

परीछत साहिजिहाण सुत कोपियो,
तछक होमण यहण साह सुत ताणि ।
तपोधनि अही हिदवाणा चाढण प्रभति,
जरू रखपाळ जैसिध सुत जाणि ॥२॥

वरण अहिमेद अहवन हरी कोपियो,
टळै न वळै जहागीर-हर टेक ।
वाहा पै गारपक जिम हुवी वहसि,
अभै पजर महासिध हर एक ॥३॥

अखिल रजरीत रा सिध लागा अरसि,
भुवणि मेछाणा रा माण भागा ।
निभै नरनाथ प्रहि हाथ निरवाहियो,
अहि सिवो दोइण दिलेल आगा ॥४॥

उभै राहा सिरं वधै कूरम आगडा,
मनै जगदीस सबळा तणा माग ।
खोद अरि अमाची पकी आडी छडै,
खोद सू राम ऊपाडियै खाग ॥५॥

(सकलित)

सूरा-परा

—जगो खिड़ियो

तुरी त्यारि कीया कसे जीण तग ।
बणावै सिरी पाखरा सार बग ॥
सजे बस छत्तीस हिन्दू समत्य ।
करेवा महासूर भारत्य कत्य ॥
ध्रुवा धारणा चित्त ऐसा सधीर ।
बडाळा वहै त्रिद वीराधिधीर ॥
पडै अग्नि मा उडिड जेहा पतग ।
आफाळै अणी उप्परा धारि अग ॥
जाते काळ नू चाळ नू जालि जुट्टै ।
तहवार ज्या तेज रा ताप तुट्टै ॥
मरेवा करै कोड भारत्य मन्न ।
त्रिणे मेल्हिया प्रज्जळै जालि तन्न ॥
पडता दिवै अब्भ थभा प्रचड ।
खळा मारि खगे करै खड-खड ॥
मरता न धारै महाजुद्ध माया ।
करै काच सीसी जित्ती टुक काया ॥
सदाई लगै खाग नै त्याग सूरा ।
पखै जे प्रिथीनाथ भूपाळ पूरा ॥
पर-त्ती न भेटै गऊ विप्र पाळै ।
चलै गति वेदो खित्री धम्म चालै ॥
इन्द्री पच जीपै महासूर एहा ।
जगज्जेठ जोधा हणूमान जेहा ॥
न भाखै अलो जीह नाकार नाणै ।
जुडेवा खित्री धम्म आचार जाणै ॥

समत्या इसा ऊडळा आभ साहे ।
गजा दत्त तोडे रिमा घाट गाहे ॥
पचारै ग्रहे वाघ रैणा पछाडे ।
भिडता गजा भीम जेही भमाडे ॥
न भागं जिके जुद्ध भागा न मारै ।
सरीरा हुवा खड पिडाण सारै ॥

(‘वचनिका रतनसिंघ महेसदासीत री’ सू)

दुर्गादास

—कुम्भकरण सादू

(गीत)

अबलघाट खट झाट दहवाट करती प्रसण,
भिडता निसाट चर घाट भागी ।
दुरग दिली जायर दरकार जुध देखिया,
लार सकर वहै प्यार लागी ॥१॥

भीमडा तणै तट विकट घट भाजती,
भोम भाराथ सिवनाथ भोळा ।
जोयवा खडा सकर सकत जेहडा,
दोवडा तेवडा जूथ दोळा ॥२॥

पेखता फिरता फिरै हूरा परी,
खिलै नारद सकत वीर खेला ।
अवलिया लिये पैकवरा अवरा,
महत है आसुरा सुरा मेळा ॥३॥

धीभरै तरै केई मीर बजरै विकर,
सणछ खग फरहरै वीर ताळी ।
कहर धर रिणोही वीर हाका करै,
अजे ही भीमडा तीर वाळी ॥४॥

(सकलित)

कूपो महिराजोत

—डूगरसी रतनू

(वडा दूहा)

साहिव कजि सिणगारि, तेजी कीयो मुरातिव ।
आगळि छोटे आणियो, चाटो चरुआदारि ॥१॥

वाजि न चहू वळाउ, फिरै कळाटू फेरियो ।
मेहा आगळ मोरडे, कीघो जाणि कळाउ ॥२॥

असिमर फर वप ओपि, कडि कूपे जमदढ कसी ।
कूत कमाण कळासिया, किलबा ऊपरि कोपि ॥३॥

माझी कूपो माहि, खाति हुओ लाडो खडे ।
सावै पथि नेडे लगनि, जान क जाणै जाहि ॥४॥

सीधू घमळ सुणाइ, पुड ग्रीघण पाखा कियै ।
परणै तिणि परि जाइ, मेछा घड महिराजउत ॥५॥

अणो तजे आखेय, लोही कूकू लाइजै ।
तण वाधावै तेय, मोड वघी महिराजउत ॥६॥

दाकिम भरियो बीद, चोरी आरेपणि चडे ।
अरि छेदै अण नीद, मछरैतो महिराजउत ॥७॥

घडा घडा तो घाइ खिसै नथी पैला खिसै ।
पाचो निणि परि जाइ, मेर क जाणै माडियो ॥८॥

धू अरि पाई धारि, घड पोइण दळि पण घरै ।
हाम तणी गति हालियो, बीदो वीरत वारि ॥९॥

सौरभ त्यै अरि मात, किलम घडा पैठो कमळि ।
भमरो जैनु भणकियो, ऊदावत अत हास ॥१०॥

(सकलित)

कवित्त (छप्पय)

—जिनहरप मुनि (जसराज)

छप्पय वाल्हउ होइ, फूल केतकी सुगधउ ।

नारी वाल्हइ होइ, अवाल आभरण निबधउ ॥

राजा वाल्हउ होइ, तुरी चचल चालतउ ।

किरण वाल्हउ होइ, दाम हरखइ दीखतउ ॥

कामी नरा वाल्ही त्रिया, वाल्ही सिग्या ऊघता ।

जिनहरप कहै मज्जन सुणउ, तिम दाता वाल्हण मगता ॥१॥

लच्छि तिका सुकयत्थ, जिका पर-कज्जइ आवइ ।

नारि तिका सुकयत्थ, जिका भरतार मुहावइ ॥

पुत्र तिको सुकयत्थ, जिको जीवता पाळइ ।

मित्र तिको सुकयत्थ, जिको नवि छेह दिखाळइ ॥

पडित तिको सुकयत्थ गिणि, पूछ्यारउ उत्तर दियइ ।

जिनहरप सुगुरु सुकयत्थ सो, जिका सह परि हित राखँ हियइ ॥२॥

जरा कियउ जाजरउ, पिंड परचड हुती जो ।

पग डग नस कै भरै, सीस धूजण लागउ सो ॥

जीभ करइ लालरा, समक्षि न पडँ बोलता ।

पडइ लाळ मुख-थकी, दात पडिया देखता ॥

आखि री जोत माठी पडी, ऊठ-बइस थई परवसा ।

जिनहरप बाल हासी करइ, जरा बिगोया माणसा ॥३॥

ढहइ महल-माळिया, कोट गढ पनि ढहि जायइ ।

ढहइ देव देहरा, अनड गिरि पाधर थायइ ॥

ढहइ गहन वन वृक्ष, ढहइ कीधी जे माया ।

देव तणो नर तणी, ढहइ सोई सुन्दर वाया ॥

जिनहरप सुधिर जस कोटडौ, जउ लागइ दुसमण घक्का ।

पिणि ढहइ नही जुग जावता, ऊडी जड घाती जिका ॥४॥

(‘कवित्त बावनी’ सू)

कैलास

—किसनी

जोयन बीस हजार जोवता, सहस्र दस पहिलउ कइलास ।
असडउ रूप अनोपम आखियइ, एक्क धम तणउ आवास ॥८१॥
बृधराव तिसा गिरराव विराजइ, अति साखा सबळवता अग ।
सिसहर तणी पाखती सोहइ, ग्रह जाणे लागी गयणग ॥८२॥
तिण पग-पग चदण तणा तरोवर, विविध-विविध फूली वणराइ ।
पखी मुखि हरि नाम पुणता, सुर ताम मानव तण सुहाय ॥८३॥
छिलता पहाड-पहाड पाखती, अघर झरता चरण धरइ ।
अब तणा वृध लुब आविया, कुजर विच सारसी वरइ ॥८४॥
छिनता झिलता घणू छलोहा, ताडी तट छाया वृध ताड ।
मद झरता इतरा मयगळ, पाएले चालस्यइ पहाड ॥८५॥
वसतूरी नाभिनि सधिनि केवल, उडियण जाइ लागी आकास ।
मृग तेथि थकत हुया वन माहे, वाजइ पवन तणा सुर वास ॥८६॥
वणराय अठारइ भार फळिय वन, कोइल मोर मल्हार करइ ।
ईसर तणी आन्या इसडी, चावरियाळ बवाळ चरइ ॥८७॥
अवसर एक अनेक आहवइ, करणी मनवछित फळ काज ।
वृध सायर पाखती विराजै, जाणे रथ खाभिया जिहाज ॥८८॥
नदी बहइ झावुका नाखती, धोम उदक ची लागी धार ।
ईसर तणी आन्या इसडी, पडडउ दइत उतारइ पार ॥८९॥

कुमार-विजय

तीस कोडि तिन्न कोड देव तन्न, सुर आधी आवीमा सहि ।
दास तणी परि काम दिखावइ, मुनवर रुधा दइत महि ॥३६३॥

सिव कहियउ देवा सिगळा ही, दूजा काइ न दीसई देव ।
 देवा बिया कन्हा घण दानी, भोळी चत्रवति पूछइ भेव ॥३६४॥
 सुर आखइ अरज करेताइ सभळु, देव बडा पछाडइ दइत ।
 आवइ हुकम जउ हुयइ उयै रउ, रहिया हुइ ऊयइ री रइत ॥३६५॥
 सिव तिण वार पनाग साहियउ, बगाली दाखवइ बळ ।
 उण वेळा सिव रइ मुहु भागळ, दूजा कुण नेठवइ दळ ॥३६६॥
 तरइ विसन कहइ आगळी विसभर, ब्रह्म तणइ छइ उया वर ।
 तीने भुवण त्रिसीग ताडिया, घणी ज कीया समय घर ॥३६७॥
 ब्रह्म तरइ पूछिया विसभर, दाखवि मरइ कियइ परि दइत ।
 देव तणउ वाहरू दाखइ, रहिया देव बडा हुइ रइत ॥३६८॥
 सेनापति कुवर हुआ कातिग सुर, सुर हूविया अनेरा साथ ।
 तइ ब्रह्म कहइ आगळि विसभर, जाई असुर सही भाराथ ॥३६९॥
 आहचइ सकति पूछिया ईसर, मेलहीस कुवर लियण ताइ माज ।
 एकण देव ऊपरइ इतरा, आखइ सती धनउ दिन आज ॥३७०॥
 वहिलउ दीन्हउ हुकम विसभर, मेछ पछाडण आप गल ।
 बडइ राग नीसाण वाजियइ, दइत तणइ देसे दहल ॥३७१॥
 प्रहू पूठती समा जाइ पूगा, घेरिया असुर रूधिया घाट ।
 ऊतरिया उर घट्ट आवे नइ, दीजइ दइत तणइ सिर दाट ॥३७२॥
 तडकाइसुर दइत बाधियउ तरकस, देखे दळ हीसीयउ दूठ ।
 हलकारइ भड आप अपूठउ, पूठी रखउ थाप लइ पूठ ॥३७३॥
 मिळिया अणी-अणी रसणे मिळ, सइधे मुहे घूमिया सार ।
 झालरिया नाखे भड शिलिया, घसकइ घरा वाजियइ धार ॥३७४॥
 आवइ नव नवा भड अणीए, छोड कमाण नीछटइ बाण ।
 देव करारा हाथ दाखवइ, असुरा घड चूकई अवसाण ॥३७५॥
 बळ करतउ घणू बोळ्यावतउ, लख भड आभ त्रिसा केलार ।
 ठोसइ गयद पहाड टेलतइ, आया असुर करे अहकार ॥३७६॥
 वाजिया आम्हो-साम्हो दाणड, घाट जुडती त्रिविध घड ।
 खटकइ कडी छडकी खागे, घ्यागे लागा वहइ घड ॥३७७॥

इत पहाड जिसा दाखीजइ, भड घूणा करता भाराथ ।
 मात्र कुवार सादूळ तणी गति, निज तो सरण अनाथा नाथ ॥३७८॥
 कुवरागुर तरइ पुन्नाम ग्रहउ कर, भड हलकारइ महाभड ।
 एवण बाण कबाण आवजइ, ऊपाडे नांखिया उपड ॥३७९॥
 भेटिया असुर मारिया माक्षी, गोरु हुइ मुख घास ग्रहइ ।
 हहरी जिक्के छुरी विच बाढइ, रहइ तिके पग छाह रहइ ॥३८०॥
 नीतइ तणा दिवाडे जागे, हुई वघाई लगइ हरि ।
 गुर असुरां अगा छोडाविया, घणा महोछव घरा घर ॥३८१॥
 प्रकल सकल अवगति अपरपर, रामेसर मोटउ राजान ।
 केसनउ कहइ कृपा हिव कीजइ, वढ दातार वधारण वान ॥३८२॥

(‘महादेव पारवती री वेल’ सू)

सरस्वती-वंदना

—धर्मवर्द्धन उपाध्याय

(गीत)

अगम आगम अरथ उतारै उर सती,
वयण अमृत तिके रयण ज्यु वरसती ।
हुअइ हाजर सदा हेतुआ हरसती,
सेविजै देवि जै सरसती सरसती ॥१॥

विद्या दे सेवका विनी वाधारती,
अडवडद्या सावडी वार आधारती ।
इद नरिद जसु उतारै आरती,
भणा तुझ नै नमो भारती भारती ॥२॥

वेलि विद्या तणी वधारण वारदा,
हुआ प्रसन्न सहु पामिजे हारदा ।
प्रसिद्ध सकल पला नीरनिधि पारदा,
शुद्ध चित्त सेव नित सारदा सारदा ॥३॥

अधिक धर ध्यान नर अगर उखेवता,
व्यास वाल्मीक काळीदास गुण धेवता ।
सुबुद्धि श्री धर्मसी महाकवि सेवता,
दीयह सहु सिद्धि थुत देवता देवता ॥४॥

मेह (गीत)

सबळ मेगळ बादळ तणा सज करि,
गुहिर असमाण नीसाण गाजै ।
जग जोरै करण काळ रिपु जीपवा,
आज कटकी करी इद राजै ॥१॥

तीख करवाळ विक् राळ वीजळि तणी,
 घोर माती घटा घरर घालै ।
 छोडि वासा घणी सोक छाटा तणी,
 चटक माहे मित्यो कटक चालै ॥२॥

तडातडि तोव करि गयण तडकै तडित,
 महाझड झडि करि झूझ मड्यो !
 कडाकडि क्रोध करि काळ कटका कियो,
 खिण करै बळ खळ सबळ खड्यो ॥३॥

सरस वांना सगल कीघ सजळ थळ,
 प्रगट पुहवी निपट प्रेम प्रघळा ।
 लहकती लाछि बळि लील लोको लही,
 सुध मन करै धम शील सगळा ॥४॥

शिवाजी (गीत)

सकति काइ साधना, किना निज भुज सकति,
 बडा गड घूणिया वीर वाक् ।
 अवर उमराव कुण आइ साम्ही अई,
 मिवा री धाक् पातिसाह साकै ॥१॥

खसर करता तिके असुर सहु खुदिया,
 जीविया तिके त्रिणी लेहि जीहै ।
 सबद आवाज सिवराज री साभळै,
 बिली जिम दिली रो घणी वीहै ॥२॥

सहर देखे दिली मिले पतिसाह सू,
 खलक देखत सिवो नाम खारै ।
 आवियो बळे कुसळे दळे आपरै,
 हाथ पति रह्यो हजरति हारै ॥३॥

बहर भ्लेच्छा शहर डहर कन्द काटिवा,
 लहर दरियाज निज धरम लोचै ।
 हिन्दुओ राउ आइ दिली लेसी हिबै,
 सबळ मन मांहि सुलताण मोचै ॥४॥

परताप निवड भड दळ पतिसाही,
आवि रणगण आहुडिया ॥७१॥

धजवड ग्रहि धवड धवड ग्रहि धजवड,
सार सुजड झड मामहिया ।
लडधड घड मडड मडड होइ लडधड,
दडड रुहिर जड वाजविया ॥
घाइ घडे अघड घड घड अरि उरुड,
मरगड वीछड घड मुडिया ।
परताप निवड भड दळ पतिसाही,
आवि रणगण आहुडिया ॥७२॥

(कवित्त)

पतिसाही दळ सरिस, राण पातल चढ्ढै रिण ।
राजा राम नरेस, तुअर दस सुहड पडे तण ॥
रहे मेडतियो राम, रहे मानो कणिआगर ।
रहे भीम डोडियो, साथ दोई लिया सहोवर ॥
रण रहे मेर दूलाहरी, सुकवि राम खग सगतसी ।
असुरेस फोज जीतो अभग, पाघर राण प्रतापसी ॥७३॥

(‘सगत रासो’ सू)

गजमोख

—अजीतसिंह (महाराजा)

ऊँई जळ में ले चलयो, गज कू विकटो ग्राह ।
तय ततकार सभारियो, राधा नागर नाह ॥१६१॥
जिण साईं पैदा कियो, सो मो पास सदाय ।
बलख अपपर ईसवर, सो वयू अळगो घाय ॥१६२॥
जळ थापो गज पीठ पर, डर उपज्यो मन माहि ।
ग्राह राह वैरी भयो, जळ ऊँई ले जाहि ॥१६३॥
तातू जळ खाणीजता, की गजरज पुकार ।
राज बिना श्रीरामजी, है कुण राखणहार ॥१६४॥
भाया ऊपर जळ फिर्यो, नैणा सूझत नाहि ।
धाहर आवो ब्रजपती, ग्राह ग्रहे ल जाहि ॥१६५॥
सादे आवो सावळा, भगता वरवा भीर ।
कह मोकू राखे कवण, राज बिना रघुवीर ॥१६६॥
हृत्यो मन हेला दिया, वणी ज विखमी आय ।
ग्राह तणा मुख माहि सू, लीजै प्रभु छुडाय ॥१६७॥
भीर पडी जद भगत कू, साहि करी व्रजराज ।
लाज हमारी राखियो, यू टेरत गजरज ॥१६८॥
रावण के दह छेद सिर, बाघे सायर पाज ।
रीश वभीखण कू दियो, लकागढ को राज ॥१६९॥
कस पछाइयो वस्न जू, वारण सता काज ।
मेद्यों सकट मात पितु, उग्रसेन दे राज ॥१७०॥
राख लियो प्रह्लाद कू, हिरणाकृस कू मार ।
धम फाड परगट भयो, धन नरहर अवतार ॥१७१॥

धू कू दीयो अटल पद, साची करो सहाय ।
 ग्राह तणा फद माहि सू, लीजै मूझ छुडाय ॥१७२॥
 हाथी बहु हेसा दिये, कर बाहर करतार ।
 वेग आवी वरदपत, मेरी भीर मुरार ॥१७३॥
 भगतबछल वद ताहरो, सबको सिरजणहार ।
 सकट मेटी सामजी, सवणा सुणी पुकार ॥१७४॥
 सुणी अणसुणी नह करी, अब अत होत अवेर ।
 वेग सभाळी ब्रजपती, हित कर इण कू हेर ॥१७५॥
 मैं दुरबळ बळहीन मैं, निरघन निपट अकाज ।
 ग्राह लिये मो जात है, साहि करी महाराज ॥१७६॥
 × × ×
 महामाय हर सू कहै, डील न कीजै साम ।
 सत उबारी आपर्णा, और तजो सब काम ॥२२६॥
 चीर वधायी द्रोपदी, राख लियी प्रह्लाद ।
 तैसे गज रख्या करण, प्रभु चडे सुण साद ॥२३०॥
 पखराव पख पाण कर, आतुर ऊठे धाय ।
 सीस हुकम है स्याम को, वेग पहुचू आय ॥२३३॥
 गुरड घणू आतुर-थकी, मन सत गुणी बहत ।
 तो ही धीरज ना धरै, आतुर कमलाकत ॥२३४॥
 गज कू डूबत जाण के, खगपति तज हर धाय ।
 तातू तोड्यो ग्राह को, आगे चक्र चलाय ॥२३५॥
 सब जळ पैठी सहज बळ, बळ बळ लगै न कोय ।
 सूड रही बाहर तबै, जळ तै आगुळ दोय ॥२३६॥
 हाथी ची ग्रह हाय, जळ तै बाहर काढियो ।
 भले भले रघुनाथ, कुण तो बिन ऐसी करै ॥२३७॥
 ऐसी तो बिन कुण करै, राज बिना हधवीर ।
 दुरबळ दीन अनाथ की, भली करी तुम भीर ॥२३८॥
 हरि कुजर वदन करै, नमण करै कर भाय ।
 महाप्रभू कुण राज विण, मेरी करै सहाय ॥२३९॥
 मैं अब हुआ सनाथ, पाप कटे भव-भव तणा ।
 मोरे सिर पर हाथ, राज दियो रघुवीरजी ॥२४०॥

राजकुमार रो जन्मोत्सव

—वीरभाण रतनू

सुर जगे सुभ समय, भूम अन जुमे मुभावा ।
रैण सभाळे राव, मिटे अटकाव वधावा ॥
नव उच्छव नर नार, नवल शृगार वसन्ने ।
गीता मे द्रग भास, कछी मम रूप किसन्ने ॥
अवतार अस अगजीत ग्रह, वस विखाद पळट्टियो ।
रितु एण उदय चहुवान रे, सुत अभमाल प्रगट्टियो ॥६५॥

(इहो)

महाराज अजमाल रे, नगर वधाई आज ।
नरपति मन भायो थयो, जायो पुत्र सकाज ॥६६॥

(छद अर्ध-नाराच)

सुरे थया नीसाणय, उछाह अप्रमाणय ।
विसाल ताल वाजित, उचार गान अमृत ॥६७॥
अदग डोल मगळी, रबाव तार सार ती ।
वजति वेरि वेरिय, भणकि इकि भेरिय ॥६८॥
छतीस राग छाजती, निहाव धाव मोवती ।
भजै विभास भैरव, रळी कळी कळी रव ॥६९॥
सरी सरी सपोसय, सुताल मालकोसय ।
मिठास आस भजरी, गरी गरी स गुज्जरी ॥१००॥
रजे मलार सारंग, रिसण रग मारण ।
रसाल ताल सौरठी, सगान तान सामठी ॥१०१॥

भणत श्री विनोदय, कल्याण के कमोदय ।
 खभायची पटगय, वगेसरी विहगय ॥१०२॥
 कलग पर्ज बग्हडा, सुरा सवाद सुग्घडा ।
 निवास सात नाळिय, त्रिग्राम मूळ ताळिय ॥१०३॥

(गाहा चौसर)

सबद उग्र करनाळ सवाई, सुर वरघु तुरही सहनाई ।
 द्वार सुरेस नरेस दिनाई वाधै साजै दीह वघाई ॥१०४॥
 कुळदेवी गृह पूज सकारण, विजन नव नेवज विसतारण ।
 धूप अगर दीपक सुभ धारण, अन देवा धन सेव अपारण ॥१०५॥
 ओपै रूप घणी रायअगण, चौक मुकत कण केसर चनण ।
 तर मजर फळ माळा तोरण, सोहै द्वार मळ धत सज्जण ॥१०६॥

(दूही)

नव नव उच्छव नवल मुख, सत्र जण नवल सिंगार ।
 नवल चित्तामै धवळहर पायी नवल कुमार ॥१०७॥

(छंद बेअवखरी)

अवा आदि तरण आमासे, परम कवर लखि हरख प्रकास ।
 सुदर चख मुख कर पद मोहै मजु रुर लख कज त्रिमोहै ॥१०८॥
 अग-अग महिमा अधिकावै, सैज अनत तेज दरसावै ।
 नार सभारै जतन निहारै, ऊपर राई लूण उतारै ॥१०९॥
 नूर सूर सम वदन निहावै, आपै मात रतन धन आवै ।
 सहर गळी प्रत गळो सुहावै, गुळ वाटे त्रिय मगळ गावै ॥११०॥
 सपज अजन सदन सुखसाजा, राम जनम जिम दसरथ राजा ।
 गुणियण द्वार वघाई गावै, प्रतदिन अन सोन्न धन पावै ॥१११॥
 जगत सूत मागध बदी जण, आसावत किया नृप ऊरण ।
 जोगी जगत सन्यासी जेता, अन घृत अमिट लहै पुर एता ॥११२॥
 चक्रवत चित वाधै कुळ चावा, असहा खीज, रीश उमरावा ।
 जालधर सुख कह्या न जावै, ईखण उदै अमर मिळ आवै ॥११३॥

(‘राजरूपक’ सू)

सेना रा वाहण

—करणीदान कवियो

ऊट

बुगर बळीच बवाळ, जूग जाळोरी जव्वर ।
अजगर कघ अक्षौञ भ्रगुट मुदगर भैराहर ॥
जोल खभ देवळा, कमठ ईहर कठठता ।
घण भरता जळ घाट, माट जैही कठठता ॥

भजवूत घूम डाचा मगर, जिया पूछ करवत जिता ।

क्षोकिया सिधु नुखता झटकि, अघ कघ राक्स इसा ॥३११॥

नवहत्थी शोकरा, मसत फीफरा भरारा ।

बगला उरळी बिहू, बगलि नीकळै छिकारा ।

रग केइक रातडा, भसम घूहर भमराळा ,

जटा जूट ऊजळा केइक भूरा वेई वाळा ॥

मिळि रोछ रूप अधियामणा, जक्स जिहाजा जम जिता ।

क्षोकिया सिधु नुखता झटकि, अघ-कघ राक्स इसा ॥३१२॥

रब्वारा घप्पले, घग्घ पाकेट भयकर ।

नेसा चसलक नयण, झाळ झागूडा नीझर ॥

आका रीठ कुरीठ, वयड छोडे वेछाडा ।

इसा दीठ अचनाड, पीठ ले हलै पहाडा ॥

कसार भार भर कठठिया, करै गाज झझट करै ।

हालिया जाणि सामद्रहू, भाद्रव वादळ जळ भरै ॥३१३॥

हाथी

मदतळ डांणा मसत, झरै झरणा गिरनीझर ।

अन चारा तजि अरघ, पिमै तडवां नीरोवर ॥

डग वेडिया दुलट्ठ, लगा चहुवा पग लगर।

आवासी सारसी, करै अग्राज भयकर॥

भभरुत रबी घोसर भसम, बाळदूत चख झाळ किघ।

बनि बसै भूत बाळा वयड, वनखडी अवधूत विघ॥३२१॥

छुल्ल मास छात्रिया, हुवा डात्रिया हठीला।

प्रचड नील जिम पीठ, निलै तमलै जिम नीला॥

मघण गाज जिम मुणे, गाज मद भसत गयदा।

सादूळी मिर पटकि, मरै सगार मयदा॥

करि फौतकार झुक्कै कहर, चाडि सूड फण चाचरै।

सिघराळ गिरद चडि जाणि सप, काळदार झाटक करै॥३२२॥

घणा इसा घेरिया, भचकि करि गडा भयकर।

बैठ-बैठ बोलता, नीठ बैठा जोरावर॥

बळां जळा सपळाय, तेल आमला चढावा।

कळा जडे वाटिया, बळा बाधिया किलावा॥

बळ हूत तिलर सिर वाडिया, प्रगट धनख जिम पावसा।

कज्जळ पहाड झळ भेंगळ किघ, जाणै सिधा अभावसा॥३२३॥

रमा भीड रेसमा, झूल घट वीर झलारी।

परा गदोला परठि, धरा चाचरा अधारी॥

जोख नोख गुलजार, कलावूता वणि कम्मळ।

तरह काम तारीफ, हौमनायक झाळाहळ॥

जगमगत फूल जरदोज रा, वयडा पीठ वखाणिया।

अधार निसा जाणै बरस, तारामडळ ताणिया॥३२४॥

घोडा

ऐराकी आरवी, घटी काष्ठी खधारी।

के बलकी सोवनी, बेक तुरकी अग्रकारी॥

मोती सुरग कमेत, लखी अवलख फुनवारी।

रग जडाव हमरग हरी गुनहरी हजारी॥

मौहरी चंवा सेली समैघ, पचकल्याण पहचानिये।

अन्नेक रग पसमा अलल, जेहा मुखमल जाणिये॥३२५॥

डाच लगाणा डहै, इसा पडवा अपारा।

रोळ पसम खुरहरा मळै हाथळा अपारां॥

अग काढे आरसी, पोत भरळकै पसम्मा ।

दरियाई कस दीघ, राळ लूवँ रेसम्मा ॥

झाकति किलावूती सझे, तग रेसम जुग ताणिया ।

ऊवडा भीड उडणा इसा, उभै कडा कसि आणिया ॥३३४॥

करे पोस जर करी, कडी सोन्नन कोतल कसि ।

वागडोर रेसमी, तरह पचरग धरे तसि ॥

एम खोल आणिया, परी करता न्त पाए ।

सूरतपाक मुचग, जलज कुरेगा वधि जाए ॥

के रजत साज जवहर कनक, छौगा मोतीयाळ छजि ।

आणे अनेक हाजर इसा, कमघ होण असवार कजि ॥३३५॥

(‘सूरज प्रकास’ स)

महाराजा अभयसिंघ री सेल

—बरजूबाई

(गीत)

आछी अगजी ताहरो भाली सारी प्रथी सीस ओपे,
ऊगा सूर ज्यू ही सारी प्रथी बदे आण ।
सारी प्रथी तणी लाज भाले थारै अर्भसिंघ,
प्रथी सारी भोग राळी हेके भाले पाण ॥१॥

गै-जूहा सिंघवा फोजा गरूठ तबाळा गाज,
बाज गैला खेहा ढके पूर बोमवाह ।
बेहू राही तणी नेकी राज रै छाडाळ वधी,
राज रा छाडाळ तणे ओले दुहु राह ॥२॥

रगाचार वरूथा डडाळा घूस पडे रोड,
अडीला छछाळा लोहू लगरा अपार ।
कूत रै भरोसे सारी खुरासाण जोखा करे,
कूत रै भरोसे जोखा करे हिन्दूकार ॥३॥

हरोळा तटाक पूर चदोळा बदवी हाथा,
सका न को फोजा घरे राजा राणा सेव ।
उभे थाटा तणी नेकी आज तो अजीतवाळा,
गाजे थारै आण वागी दूसरा गगेव ॥४॥

दसू दिसा राजा थारै सेल री दुहाई दीजे,
थारै सेल साहू जिसा ओझके अयाह ।
सेल थारै नचीती दिली री सारी पातसाही,
सेल थारै नचीती दिली री पातसाह ॥५॥

(सकलित)

गुण अलख

—पीरदान लाळस

निमो ब्रिज रा बाळ सग लोक वासी ।
आया नद रै आगणै, अविणासी ॥
अला नद रै आगणै माहि नाचै ।
अला राम रा सहज ए साचि राचै ॥
अला बाप चरिताळ हाथे बघावै ।
अला हेता सा जसोदा हुलरावै ॥
अला वत मा जाइ मुरळी बजावै ।
राजा राम ना ओयि राघा रमावै ॥
अला पौरसे हुओ दर्ईता पछाडै ।
अनड गोरधन हाथि एकिणि उपाडै ॥
अला भयुरा मा जाइ नै वस 'मारै ।
अला आपरा भगत ओयो उघारै ॥
अला उग्रसेना सरिसि राज आपै ।
अला फुरिदि बामण तणी तुरत वापै ॥
अला रुखमणी राज रै पट्टराणी ।
अमुर मार नै आह्वै भली आणी ॥
अला अनरज तू हीज भरतार ओखा ।
अला सहज पदवन रा तू हीज सरोखा ॥
अला जुघ री यात अधियात जाणै ।
माळी तारि नै बूबढी नारि माणै ॥
अला जुघ नै दैत गिनिया न जायै ।
अला घड डडूळ नां तू हीज घायै ॥

(‘गुण अलख आराध’ मं)

कुंडलिया

—बेसरीसिध जेतावत

कह-कह करै कुरक्षडी, युग सू करै पुकार ।
काची माया कारणे, सब भूलो ससार ॥
सब भूलो ससार, देख माया आडम्बर ।
जळ सूधी खिण जमी, नीम ऊडी देवै नर ॥
ऊमा छाडि अवास, जाय जी रण कौ घर ।
जीव हुवै जम हाय, छार ऊपर लोटै घर ॥

विरतार समर आळस म कर, रहै मोत सिर पर छडी ।

केहर जगत सू इम कहै, करै पुकारा कुरक्षडी ॥१॥

कहै गगन चढ कावळी, साभळयो सहकोय ।
जी हर लाभ जीविया, तो मानव देखो मोय ॥
मानव देखो मोय, बरस एक सहस वदीता ।
ज्यूनर वसै भुयग, रहै मुख रीता वा रीता ॥
ऐसे ही पाळी देह, कछु नह लाभ कमायो ।
जमी भमी बसमान, जीवति आमिख पायो ॥

अब अतर बार अळगो अनत, ऐसे हीली आमळी ।

जगदीस भजौ जीवो जितै, कहै गगन चडि कावळी ॥२॥

बागुळ सिर ऊधी वडा, नीचो का निरखत ।
मो माया धर मे रहो, को खिण काढ लियत ॥
को खिण काढ लियत, जिण आटै धर जोऊ ।
दिन काटू इण दुख, सदा रात री न सोऊ ॥
न खाधो, न खरचियो, मेलि धर माहि लुकायो ।
मुख खाणी, मुख विट, जनम ऐसो फळ पायो ॥

पारकी होय पडिया पछै, खाज्यो पिड ऊभे खडा ।

केहरी कहै देखो सहू, बागुळ सिर ऊधी वडा ॥३॥

हु हु हु हु कर रह्यो सुण घूषू विय जाण ।
 हु हु करता एक दिन, जासी छूट पराण ॥
 जासी छूट पराण, आव री म कर बडाई ।
 आठ सहस भख जीव, कहा सुभ कीध वमाई ॥
 निसा सताया जीव, मारि कै आमिख खायी ।
 राजा नाम धराय, कहा गोविंद गुण गायी ॥

पाप री कीध सिर पोटली, आव बडी निसचर थयी ।
 केहरी कहै घूषू कृटिल, हु हु हु हु कर रह्यो ॥४॥

सारसडी सर छाडि कर, बोली चडि असमान ।
 कूडी जीवण केहरी, मरणो हक्क निदान ॥
 मरणो हक्क निदान, नेट आ देह बिडाणी ।
 वीसल हदी वीस बोड, जळ माहि बुडाणी ॥
 दुरजोधन जळ पेस, मरण दिन माण गमाणी ।
 जळनिध खाई जकौ, रह्यो नह रावण राणी ॥

जळ माहि जीव जीव नही, है दम जेत गाय हरि ।
 केहरी गयण चडि यू कहै, सारसडी सर छाड करि ॥५॥

आड तरै छीलर मही, सायर तर्यो न जाय ।
 सायर मे हसा तरै, सो मोताहळ खाय ॥
 सो मोताहळ खाय, आड अघरम अहारा ।
 जैसे नर लोभ रा, करै आहार विपारा ॥
 परम हस प्रम पुरख, कोई निरमळ होय घ्यावै ।
 सब त्यागै ससार, जकै मोताहळ खावै ॥

केहरी कहै देखी सकी, कथा एह सकर कही ।
 कोई मूर हस सायर तरै, आड तरै छीलर मही ॥६॥

पपीयी पिउ पिउ करे, पिउ की नही पिछाण ।
 केहरि पिब कै कारण, प्यारी तजै पराण ॥
 प्यारी तजै पराण, मुख कहती नह डोलै ।
 सहोवर सब ससार, गुह्य अपणै पिउ योलै ॥
 नगर नायका नार, फिरै होय सदा सोहागण ।
 घण माटिया तिओत, अत दिन जाय अभागण ॥

मन साध बिना किम हरि मिलै, यू ही अलीक कय ऊचरै ।
 केहरि कहै मन म कपट, पापहीयो पिउ पिउ करै ॥७॥

वळै न वागड वास

—आपा आढो

(गीत)

जोवन कारमो विहाणे उठ जासी,
आदर भजन तणो अभियास ।
प्राणीया कदे न आवै पाछो,
वळै न बीजा वागड वास ॥१॥

हुए सनाथ जगत मत हारो,
नाथ समर सुरलोक नरेस ।
माग्याथका फेर नह मिळसी,
बीस कोड देता लघु वेस ॥२॥

सूने गाम म पाड सियाडा,
गाफल हिवडा रा रख म्यान ।
ओपा ए दन फिर कद आसी,
भजसो वळै कदे भगवान ॥३॥

फरसराम भज चाख अमृतफळ,
जनम सफळ होय जासी ।
पाछो वळै अमोलक पछी,
अण तरवर कद आसी ॥४॥

(२)

थोडो ही कुण करै भरोसो थारो,
वीसे ही वातें लखण बुरा ।
लूटे तो विण कुण लाखीणो,
जोवन सरखो रतन जुरा ॥१॥

अरजण भीम जसा आनीजा,
 रसे वेदल कीया रग ।
 जरे तूज कवण जोजरी,
 नवपण जसा अमोलख नग ॥२॥

पीळा चावळ कणे परठिया,
 वे गम आवै माण बण ।
 हेर लिया जण जण रा हेतू,
 पाण रा राखण तरणपण ॥३॥

चकवै छट थाका तन छेदे,
 पावा जिम तरवर रा पात ।
 ओपा जुरा पयर नू आवै,
 मानव देह तणी के मात ॥४॥

(३)

दिलडा समझ रे समळो जग दाखे,
 पछे घणो पछतासी ।
 पुरख जनम त् कद पामेला,
 गुण कद हर रा गासी ॥१॥

मात पिता दोलत बघव भद,
 सुत तिरिया देख संघाणो ।
 माया रा आडम्बर माहे,
 बदा केम वेंघाणो ॥२॥

समझे क्यू न अजे समझावू,
 झूल मती रे भाया ।
 दोहं ऊमर घटवा देती,
 छिन ज्यू वादळ छापा ॥३॥

सोवै घाय करै नह मुश्रत,
 घोवै देह खलोता ।
 प्रीते करे समरो सीतापत,
 जके जमारो जीता ॥४॥

(४)

पातरिया बाट, न-पीरा पीहर,
 आलबण निरधारा आप ।
 तू तो मात न माया तीकम,
 बापी तु ही न बापा बाप ॥१॥

अलख तु ही आळसिया उद्दम,
 पाळग तु ही न-यखा पाख ।
 तू पग हाथ पागळा दूटा,
 आधा तू परमेसर आख ॥२॥

परमेसर तू त्रसिया पाणी,
 सत भूखिया साक रसाल ।
 गूगा वाच तु ही गिरधारी,
 बडो तु ही है अकल विसाल ॥३॥

ब्रजवासी थाका वीसामी
 जळ बूडा री तु ही जिहाज ।
 नी धरिया घर तू नारायण,
 मादा री औखद महाराज ॥४॥

साची धणी विपत मे सपत,
 तेडयो आवं सीजी ताळ ।
 विखमी घाट तणी वोळाळ,
 साई दुकाळा तणो मुगाळ ॥५॥

तोडण तु ही वेडिया ताळा,
 पाळा री तू है सुखपाळ ।
 बौहनापी ऊघाडा बखतर,
 ढळियो लोह न-ढालां ढाल ॥६॥

ओपो आडो बहै ईसवर,
 नित राख चित थारी नाम ।
 तसनी माय देण सुख तू ही,
 रान तणी बसनी तू राम ॥७॥

ठाकर जोधसिंघ नाथावत चौमू रौ

—हुक्मीचद खिदियो

(गीत)

बागा ऊपडी सतारा सेन वाळी चोडे खेत घोच,
रुक्ताळी घडी हेक वागी वज्रवाह ।
नाथाणी जोघार वस भीघोसे हरोळा नेत,
नेत वेही कीघो वघै हरोळा निवाह ॥१॥

घण्टी हाक डारु हूँ हैजम्मा हुचकें चोरे,
कोळ दाड चक्के भू लचकरे कौम वघ ।
जाडो भार पडता आमर आही अद्र जेम,
धीजी नाथ जूटी फोजा लाडी तेनवध ॥२॥

बोमडा भणके चीला मणके माडकां मोक,
सनाहा खणके कडी वेई जौम वण ।
क्रोध झाडा मत्ये डाक डडाडा रण्डे डेई,
वीर वाडा मत्ये वेई मण्डे दण्ड ॥३॥

तेज जगां तोरें बीम चारगा विजकें नू ही,
घारणा मघोस तू ही अग अग घोड ।
जगा नाग वाळा घू पहाड वाडा नू हीसो कें,
रोखमी वराळा तू ही गहै वाका रीट ॥४॥

गिरदा वकोड डहा गेह नणगां नू गावे,
भाजें भीव भारा नू कें कागिमां भाराव ।
साहमी सहय सार घारा नू मिनान गावे,
नाथ मनारा नू दावे नाथवना नाथ ॥५॥

बाटो थोप बोरा नेत सोहनेम बाटा कुड,
 शाटा घगां घोहनेम बाटा तोरा मड ।
 विमाण अरोहनेम बाटा बोम मोरा बोने,
 मोहनेस बाटा बाटा शोरा राही मड ॥६॥

नद भूतनाथ नू नचाटो घाडी बीर नटा,
 रूपून राखि नाग घटां कीध रोध ।
 जोध धार हटा जूत घटां घटां शडे बेर,
 जोध मारहटा पाडी पडे महाजोध ॥७॥

शाट बाट भटां मटां शडकरी शोशडा बाहे,
 दाहे बसवान भटां छटां बांग धोर ।
 मूर धोर बांग के बवागगीर बाण गाहे,
 माहे गोरवान रुपी गोरवान मोर ॥८॥

(संक्षिप्त)

नीति-वचन

—किरपाराम खिड़ियो

मुख मे प्रीत सवाय, दुख मे मुख टाळो दियो ।
जो की कहसी जाय, राम-कचेडी, राजिया ॥१॥

सो मूरख ससार, कपट जिणा आगळ करै ।
हरि सह जाणणहार, रोम-रोम री, राजिया ॥२॥

ओरु अकल उपाय, कर आछी, भूडी न कर ।
जग सह चाल्यो जाय, रेळा की ज्यू, राजिया ॥३॥

समर सियाळ सुभाव, गळियारा गाहड करै ।
इसडा तो उमराव, रोदया मुहगा, राजिया ॥४॥

सावा तीतर लार, हर कोई हाका करै ।
सीहा तणी सिकार, रमणी मुसकल, राजिया ॥५॥

आवै नही, इलोळ, बोलण चालण री विविघ ।
टीटोड्या रा टोळ, राजहम री, राजिया ॥६॥

नभचर विहग निरास, बिन हिम्मत लाखा वहे ।
वाज वपत कर वास, रजपूती मू, राजिया ॥७॥

लूका करै न लोप, वन नाहर भेळा बसै ।
करै न सबळा कोप, रका ऊपर, राजिया ॥८॥

रोटी, चरखो, राम, इतरो मतलब आपणी ।
वे डोकरिया काम, राजकथा सू, राजिया ॥९॥

पल-पल मे कर ध्यार, पल-पल मे पलटै परा ।
ये मतलब रा थार, रज मुख लायक, राजिया ॥१०॥

मतलब री मनवार, चुपकै ल्यावै चुरमो ।
बिन मतलब री बार, राव न घालै, राजिया ॥११॥

धोचो लाग्या घाव, धी गीहू भावै घणा ।
 इसडा तो उमराव, रोदया मुहगा, राजिया ॥१२॥
 आहव नै आचार, वेळ्या मन आघो वधै ।
 ममझ कीरती सार, रग छै ज्यानै, राजिया ॥१३॥
 कारण कटक न कीघ, सखरा चाहीजै सुपह ।
 लक विकट गड लीघ, रीछ-वानरा, राजिया ॥१४॥
 भलयागिरां मझार, हर कोइ तर चदण हुवै ।
 मगत लियै सुधार, रूखा नै ही, राजिया ॥१५॥
 मिलिया अत मनवार, बीछड़िया भाखै बुरी ।
 लानत दे ज्या लार, रजी उडावो, राजिया ॥१६॥
 मिणघर विम्व अणमाव, मोटा नह धारै मगज ।
 बीछू पूछ बणाव, राखै सिर पर, राजिया ॥१७॥
 साचो मित्त सचेत, कहो न काम करै किसो ।
 हर अरजन रै हेन, रथ कर हाक्यो, राजिया ॥१८॥
 गहभरियो गजराज, मद छकियो चालै मतै ।
 कूकरिया बेकाज, रगड भुमै वपू, राजिया ॥१९॥
 गुण-ओगुण जिण गाव, मुणै न कोई साभळै ।
 मच्छ-गळागळ भाय, रहणो मूसकल, राजिया ॥२०॥
 मतहीणा सिरदार, मतहीणा राखै मिनख ।
 अस आघो असवार, राम रखाळो, राजिया ॥२१॥
 हिये मूड जो होय, की सगत ज्या रो करै ।
 काळै ऊपर कोय, रग न लार्नै, राजिया ॥२२॥
 उपजावै अनुराग, कोयल मन हरखित करै ।
 फडवो लागै काग, रसना रा गुण, राजिया ॥२३॥
 पाटा पीड उपाव, तन लाग्या तरवारिया ।
 भरै जीभ रा घाव, रती न ओखघ, राजिया ॥२४॥
 नहचै होय निसक, चित नह कीजै चळ-विचळ ।
 अँ विघना रा अक, राई घटै न, राजिया ॥२५॥

भरत

—मछ (मनसाराम)

(गीत)

आयो भरथ अबध अभग,
मडे पावडी उतमग ।
रइयत कीध अत उछरग,
इम आवास जाय उमग ॥१॥

जालम तेखत कचण जाण,
पघरा पावडी निज पाण ।
राजा राम री रसणाण,
आलम अदल वरती आण ॥२॥

धेटू छोड ववा थोक,
मह अघ दीध हासल मोक ।
सानू रीत रो नहँ सोक,
सगर मुधी सगळा थोक ॥३॥

वलकल पहरिया घर बोध,
राघी इद्रिया कर रोध ।
सोवें घरा आसण मोध,
जीमे बघत एवण जोध ॥४॥

मुन ग्रह बेकई सरसाय,
वन विघ रिपी अग बगाय ।
बीघा वारणे घन वाय,
मन हर र्हे घरणां मांय ॥५॥

(‘रघुनाथ रूपक गीतां रो’ सू)

गीत

—बाकीदास भाशियो

१ श्री करणीजी

कीधी तै कोप साशियो कानो,
रिडमल नै दोधी तै राज ।
चारणवाडा तणी चारणी,
लोक भहो तू राखै लाज ॥१॥

बरपाडा धरपाडा वाळी,
आभ जडा नाखै ऊपाड ।
कोय न गाज सके किणियाणी,
जीझणियाळ तुहाळा शाड ॥२॥

मेछा अपराधिया मारणी,
भला सवगा आवै भाव ।
करै करा छाया तू करणी
गाजे कुण गढवाडा गाव ॥३॥

बाका, मेहासधू म विसरै,
सकट हरै सामळै साद ।
गढवाडा गढ ओलै गाजै,
मढरै ओलै गढा अजाद ॥४॥

२ पावूजी राठीड

प्रथम नेह भोनी, महाक्रोध भीनी पछै,
लाभ चमरो समर, झोक लागै ।
रायकवरी वरी, जेण वार्ग रसिक,
बरी घड कवारी, तेण वार्ग ॥१॥

हुवे मगळ घमळ, दमगळ बीर हक,
रग तूठी कमघ, जग हठी।
सघण बूठी कुसुम वोह जिण मौड सिर,
विसम उण मौड सिर, लोह बूठी ॥२॥

करण अखियात चढियो भला काळमी,
निवाहण वैण भुज बाघियो नेत।
पवारा सदन वरमाळ सू पूजियो,
धळा किरमाळ स पूजियो खेत ॥३॥

सूर बाहर चढे चारणा सुरहरी,
इतै जस जितै गिरनार आदू।
विहड खळ खीचिया तणा दळ विभाडे,
पोदियो सेज रणभोम पादू ॥४॥

३ उद्बोधन

भापो इगरेज मुलक रै ऊपर,
आहंस लीघा खँच उरा।
घणिया मरे न दीधी धरती,
घणिया ऊभा गई धरा ॥१॥

फोजा देख न कीधी फोजा,
दोषण किया न खळा डळा।
घवां-खाच चूडे खावद रै,
उण हिज चूडे गई यळा ॥२॥

छत्रपतिया सागी नँह छाणत,
गदपतिया घर परो गुमी।
बळ नँह पियो बापडा बोला,
जोतो-जोतो गई जमी ॥३॥

दुप पत्र मास बादियो दिघणी,
भोम गई सो सिधत भवेत।
पूगो नही पावरी पक्की,
दीघी नहीं मँठी देम ॥४॥

वज्रियी भलो भरतपुर वाळो,
 गाजै गजर धजर नभ गोम ।
 पहिला सिर साहव रो पडियो,
 भड ऊभा नैह दीधी भोम ॥५॥

महि जाता चीचाता महिला,
 ऐ हुय मरण तणा अवसाण ।
 राखो रै किहिक रजपूती,
 मरद हिन्दू की मुस्तळमाण ॥६॥

पुर जोघाण उदैपुर जैपुर,
 पहु थारा खूटा परियाण ।
 आकै गई, आवसी आकै,
 बाकै आसल किया बखाण ॥७॥

(सकलित)

डिंगल री महिमा

—नवलदान लाब्स

(गीत)

किसू व्याकरण अवर भाखा अने पराकृत,
ससकित तणै क्यू फिरै सागै ।
लाख रा ठाकरा तणा माया लुळै,
आखरा तणा गजबोह आगै ॥१॥

नायका पाठडा हूत आवै नही,
लायका छरा री अतर लाहा ।
कोइक विरदायका माय जाणै सकव,
वायवा सायका तणी वाहा ॥२॥

तिकण री सीखिया भेद नावै सुरत,
सुरत पण पेखिया पटै सासै ।
विघव घण जाण रा माण छाडे वटै,
वाण रा जहूरा तणै वासै ॥३॥

जोगमाया तणी भगति कीघा जुडै,
प्रथी सिर भुडै नह विकट पैडा ।
सगत रा पुत्र जाणै कोइव वचन सिघ,
उगत री जुगत रा घाट ऐंढा ॥४॥

(सकलित)

श्रीराम स्तुति

—किसनो आढो

(गीत चित्त-हिलोळ)

दीनां पाळगर घन सुतन दसरथ, सकज सूर समाथ ।
रिणघेत भजण सकुळ रावण, नेतवघ रघुनाथ ।
तो रघुनाथ रे रघुनाथ,
रिवकुळ आभरण रघुनाथ ॥१॥

तन स्याम सषण सरूप ओपत, सुपट बीज सवाज ।
रिम कोट हण जन ओट रवखण, मोट मन महाराज ।
तो महाराज रे महाराज,
माहव मोट मन महाराज ॥२॥

हक-धगा लाखा अशुर हरणो, जुघा करणो जैत ।
चाढणी कुळ जळ दळद चौजा, बाढणो विरदैत ।
तो विरदैत रे विरदैत,
विरदा धारणो विरदैत ॥३॥

बळ तथा अवखी बळत बेली, तवै जगत तमाम ।
नित किसन किव रट नाम निरभै, रसन स्त्री रघुराम ।
तो रघुराम रे रघुराम,
रजवट धारिया रघुराम ॥४॥

(‘रघुवर जस प्रकास’ सू)

नीति

—रायसिंघ सांदू

जोय घर लका जेण, सोना री हुती सरख ।
दसकघ रै मुख देण, भिळियो रती न, मोतिया ॥१॥

वीसलदे वाळीह, मत कोइ कीजो मानवी ।
भेळी कर भाळीह, माण न जाणी, मोतिया ॥२॥

लाखा आवै लोय, सपना ज्यू जावै सरख ।
हुवै भगत ज्यां होय, मुगत परापत, मोतिया ॥३॥

अजे घणी उज्जेण, भणजे वाता भोज री ।
जुग मे दाता जेण, मरै न कीरत, मोतिया ॥४॥

दाटी वीकाणेह, रासै माया राठवड ।
जुग सारो जाणेह, माया न दाटी, मोतिया ॥५॥

भूमा रै घर सोय, हेम तणा भाखर हुवै ।
वाज न आवै कोय, मिनखा बीजा, मोतिया ॥६॥

पिंड मे मोटा पाप, पम वहता बाधा पडै ।
अळगा रहिये आप, मैला मिनखा, मोतिया ॥७॥

रात दिवस हिव राम, पढिये जो आठू पहर ।
तारे कुटम तमाम, मिटै चौरासी, मोतिया ॥८॥

राश्र्वे द्वेस न राग, भाघै नह जीभा बुरो ।
दरसन करता दाग, मिटै जनम रा, मोतिया ॥९॥

जीह न धोवै छूठ, श्रवणा श्रूठ न सांभळै ।
वरजै कुण वैकूठ, माघव दरगह, मोतिया ॥१०॥

गोपी-विरह

—बखतावर

३

(पद)

बिहारीजी म्हासू नेहडलो न बिसार ॥टेक॥
बाह पकडि मति छाडो साजन, बिन आयु मत मार ।
थारै कारण राज बिहारी, म्हे तन मन घन दियो वार ।
बखत पड्यो आज्यो बखतावर, बिरह अगन मत जार ॥

(२)

थारा छा बिहारी, म्हासू नेह न तोडो ॥टेक॥
थारी म्हारी प्रीत पुराणी, अब धे मुख मत मोडो ।
एक बात की काण राखज्यो, बाह पकडि मत छोडो ।
टूटी मन मिलै नही बखतावर, तातै फेरि बहोडो ॥

(३)

भली पाळी प्रीत बिहारीजी, इचरज आवै ॥टेक॥
प्रीत करी कछु बैर बिसायो, अब म्हारो मन पिछतावै ।
छिन-छिन जोडी, पल-पल तोडी, कुण थानै भला बतावै ।
कपट प्रीत सू बैर भलो छै, बखतावर मन भावै ॥

(४)

थारा छा बिहारी म्हासू हस्या मति जावो ॥टेक॥
तात मात अर कुटम कवीलो, तुम बिन ठौर बतावो ।
थासू जोड सकल स तोडी, मन थारै चरणा रखावो ।
कहै बखतावर सुणो ब्रजनदजी, बिरह की अगन बुझावो ॥

(५)

बिहारी थारो नेहडलो, सोई दीठो ॥टेक॥
हिया रो हेत हाथ मे ई दीसै, मन क्यू राज रो चीठो ।
ब्रजबास्या नै जोग सदेसो, काई सो लगायो छै अगीठो ।
बखतावरि पिया खाया ही जाणज्यो, गुड तो अधेरै मही मीठो ॥

(६)

व्यानणी मे ऊभा जी बिहारी म्हारा राज,
 प्यारा म्हानै लागो ॥टेक ॥
 ये तो बिहारी म्हानै ऐसा प्यारा लागो,
 ज्यू बामण गळ तागो ।
 ये तो बिहारो म्हानै ऐसा प्यारा लागो,
 ज्यू सोनै माय सुहागो ।
 मोर मुकट पीताम्बर सोहै,
 अर केसरिया वागो ।
 पहली प्रीत करी मन मोहन,
 अब म्हानै मत त्यागो ।
 कहै बखतावरि मोरा बडभागण,
 भाग पुरबलो जागो ॥

(७)

धोडो रग दीज्यो जी बिहारी म्हारा राज,
 दूणी म्हानै आवै ॥टेक॥
 भाग मिरच वा खेत बुहाया, राधा राणी सुरड मगावै ।
 सोनै की कूडी, रुपै की घोटा, मथरा की मिरच मगावै ।
 ओर सख्या नै थोडी प्यावै, राधा राणी अधिक छिकावै ।
 कहै बखतावर सुणो ब्रजचदजी, पीता ही रग चढावै ॥

(सकलित)

द्रौपदी री पुकार

—रामनाथ कवियो

द्रौपद हेला देय, वेगो आ, वसुदेवरा ।
लाज राख जस लेय, लाज गयां ब्रद लाजसी ॥१॥

सारो पळट्यो साध, वूड विचारी करवा ।
हरि इज्जत न हाथ, सह मिल घाल, सावरा ॥२॥

पति मो वचन प्रमाण, प्राण प्रबळ तज बंठिया ।
ओ करव अवसाण, सबळो पायो, सावरा ॥३॥

खरो ज पाको घेत, ऊभा धणिया ऊज्जहे ।
चित मे कीर्ज चेत, वेगो आ, वसुदेवरा ॥४॥

पति मो देख पाध, घरता पग धूर्ज घरा ।
आव ताज न भाच, घर नख सू कुचरे धवल ॥५॥

सासू भरिया साल, जाया पाचू जो भरद ।
खोटो रचियो ख्याल, सब जग हसै ज, सावरा ॥६॥

होय सभा हमगीर, दुस्सासन खँचै दुसट ।
चिळ्यो पुराणो चीर, सिर मू चाल्मो सावरा ॥७॥

मो मन पडियो मोच, 'आव कया' आयो नही ।
साडी रो नहँ सोच, सोच विडद रो, सावरा ॥८॥

जो तन तिल जेतोह, आज सभा बिच ऊघडै ।
हरि पाडव हेतोह, हू जाणू होतो नही ॥९॥

मिनिया मजारीह, अगन प्रजाळी ऊवर्या ।
बरती मो वारीह, सीवै क जागे, सावरा ॥१०॥

रज्जमुला नारीह, कया गोप किण स कहू ।
समजो हर सारीह, सरम घरम री, सावरा ॥११॥

सेतां तिरिया लाज, पति बोदो आढो पढे ।
 ऐ नर बँठा आज, सिष स्याळ हई, सांवरा ॥१२॥
 लाखाप्रहू री लाय, तै पांडव राख्या त दिन ।
 वडा किया वन माय, साथ न छोह्यो, सांवरा ॥१३॥
 देखँ भीसम द्रीण, जेठ करण देखँ जठँ ।
 को हरि वरजँ कौण, लाज-रखाळा लाज ले ॥१४॥
 होसी जग मे हास, द्रोपद नागी देखतां ।
 साही पहली सास, सटकँ ले ले, सावरा ॥१५॥
 जाणै किसो अजाण, तीन लोक तारण-तरण ।
 होवँ द्रोपद हाण, सरम घरम री, सावरा ॥१६॥
 गुड्ड वचन गायोह, सुण पायो जद सांवरो ।
 अत वेग आयोह, चीर वधायी चौगणो ॥१७॥
 घरती पढ़यो डिगास, अंबर सू अंबर अडघो ।
 आयो पूरण आस, सम्पत घर ले सांवरो ॥१८॥

(‘करुणा बावनी’ छं)

वीरलोक

—सूर्यमल्ल मीसण

इळा न देणो आपणी, हालरिया हुलराय ।
पूत सिखावै पालणे, मरण वडाई माय ॥१॥
पायो हेली पूत नू, सोमल घण लिपटाय ।
अचरज अतरं जीवियो, क्यू न मरै अब जाय ॥२॥
बिण नूतं घण पाट्टणा, हेली ठलिया आय ।
जाणै पीव परूसणो, भूखै हेक न जाय ॥३॥
घण नू आळगसी घणी, सुणिया वागी सार ।
हालीजं उण देसठै, प्राणा री व्यापार ॥४॥
निघडक सूतो केहरी, तो भी विमुहा पाव ।
गज गंडा धीर न धरं, वज्र पडै बघवाव ॥५॥
पग पाळा, छाती घडक, काळी-पीळी दीह ।
नैण मिचं साम्ही सुणं, कवण हकाळै सीह ॥६॥
तुडा गज, फेटा तुरी, डाडा भड औशाड ।
हेकण कोलै घूदिया, फोजा पाथर पाड ॥७॥
बबी अदर पौडिथौ, काळी दबके काय ।
पूगी ऊपर पाधरी, आवै भोग उठाय ॥८॥
बिण माथे वाडै दळा, पोडै करज उतार ।
तिण मूरा रो नाम ले, भड बाघै तरवार ॥९॥
टोटै सरका भीतडा, घाते ऊपर घास ।
वारीजै भड झूपडा, अधपतिया आवास ॥१०॥

(‘वीर सतसई’ सू)

गीत

दगौ विचारै फेरियो अगरेजा लोगा चौगिडही,
तासा बबी झडदा, तेडियो नाग ताय ।
भाल घाचौ फेरियो, खँह री हूत छायो भाण,
बाघली बेहरी 'चैन' घेरियो बलाय ॥१॥

माचै खाग झाटा राचै तवाई छ खडा माथै,
रना आट पाटा नदी बहाई रोसाग ।
पाथ थाटा जग रूपी कुवाणा नवाई पाणा,
सत्ताटा वेडियो थाटा, सवाई सौभाग ॥२॥

सुणै घोर तासा, आसमाण लागियो सीस,
सत्ता धू 'चैन' रो खाग वागियां समूळ ।
कोपै हण' आसुरा विभाडवा आगियो किना,
सिधुर पाडेवा सूती जागियो सादूळ ॥३॥

देखता एहवो जग घडक्कै आगरो दिल्ली,
बबी जैत मागरा रडक्कै धारवार ।
झडक्कै खाग रा बाढ, भडक्कै कायरा झुड,
हमल्ला नाग रा माथा रडक्कै हजार ॥४॥

(सकलित)

ऊनाळो

—ऊमरदान

तपे भूम अम्मर हुय ताता, मुरझाई भगती पितु-भाता ।
वागी झाट पिछम दिस वाता, वक हुवो सब देस विघाता ॥
तर घर सूका नदी तडागा, लाज घर्म विद्या मग लाग्ता ।
आरज हसा उडगा आगा, कपटी दादर रहगा वागा ॥
सीळ सतोप शूरता सारा, तूटण सगा दिवस मे तारा ।
छूटा नीर निवाणा खारा, चोपाया घर मिळै न चारा ॥
भूमि भाज घसगो जस भोगी, साच सुहस्ती ससके सोगी ।
दान ऊट रे लागी दोगी, जाण अजाण सोई थाको जोगी ॥
जाचक हिरण तिसाया जावै, पुन्न नीर सुपने नहि पावै ।
घर जिग्वासू दस दिस घावै, मृगतिसणा गुरु लख मुरझावै ॥
सत-सगत सुर बाग सुकायो, मिळे कडू बळियो मुरझायो ।
ठडो जळ नहि ठरे ठरायो, भूले ज्ञान सुण्यो मन भायो ॥
भाई जमड अविद्या बाधी, च्यार वर्ण चडगी चखचाधी ।
विरचा घजा तूटगी बाधी, सदाचार री सेंघे न साधी ॥
कविजन वृन्द कवळ कुमळाया, गीत कुकवि जणु स्याळा गाया ।
मूरख भगतां सोर भचाया, काळी रात जरख कुरळाया ॥
ओ ऊपर ऊनाळो आयो, दीन जना दोरो दरसायो ।
पाणी ज्ञान कोई नहि पायो, कूके लोक हुवो अति कायो ॥

(‘ऊमर काव्य’ सूं)

रै मन

—चतुरसिंह (महाराज)

(पद)

रै मन, छन ही मे उठ जाणो,
ई रो नी है टोह-ठिखाणो ॥ टेक ॥

साथे बई नीं सायी पैली, नीं साथे अय जाणो ।
धी धी आय मल्लेगा आगे, जी जी बरम बमाणो ॥
मो मो जनन करे ईं तन रा, आग्र नीं आपाणो ।
बरणो वै सो सट बर मे, पछे पडे पछताणो ॥
दो दन रा जीवा रे छातर, बयो अनरो ऐंठाणो ।
हाथा मे तो बई नीं आयो, बाता मे बेबाणो ॥
बणो तीम वै गांम बमार्ये, बणो नीम बमठाणो ।
ईं तो पवन पुराय रा मेठा, घालुर भेद पिछाणो ॥

(द्रष्टा)

गहट परै, बरग्यो करै, पन फरवा मे फेर ।
हेर बाइ हरयो करै, हिर छुती रा डेर ॥१॥
बाह्य विषे विरोध ओ, करै फुहर्यां बाट ।
बां गू लो भाटा मना, रा मे मेटे राइ ॥२॥
भावे ओ भुगगाप, दूबा दुष दीजे मधी ।
पेजे गू विगवान, मर दीजे भागेगरी ॥३॥

(संक्षिप्त)

चेतावणी रा चूंगट्या

—बेसरीसिंह वारहठ

- पग-पग भम्या पहाड, घरा छाड राख्यो घरम ।
(ईंमू) महाराणा र मेवाड, हिरदै बसिया हिंद रै ॥१॥
- घण घलिया घमसाण, (तोई) राण सदा रहिया निडर ।
(अब) पेखता फुरमाण, हलचल किम फतमल हुवै ॥२॥
- गिरद गजां घमसाण, नहचे घर माई नही ।
(ऊ) भावै किम महाराण, गज दो सै रा गिरद मे ॥३॥
- ओरा ने आसाण, हाका हरवळ हालणो ।
(पण) किम हाले फुळराण, (जिण) हरवळसाहा हाबिया ॥४॥
- नरियद सह नजराण, झुक करसी गरसी जका ।
(पण) पसरेलो किम पाण, प्राण छता थारो फता ॥५॥
- सिर झुकिया सह साह, भीहासण जिण साम्हनै ।
(अब) रळणो पगत राह, फावै किम तोने फता ॥६॥
- सकल चढावै सीस, दान धरम जिण रो दियो ।
सो खिताव बखसीस, लेवण किम ललचावसी ॥७॥
- देखेला हिंदवाण, निज सूरज दिस नेह सू ।
पण तारा परमाण, निरख निसासा न्हाकसी ॥८॥
- देखे अजस दीह, मुळकेलो मन ही मन ।
दभी गड दिल्लीह, सीस नमता सीसवद ॥९॥
- अत बेर आखीह, पातल जो वाता पहल ।
(वे) राणा सह राखीह, जिण री साखी सिर जटा ॥१०॥
- कठिन जमानौ कौल, बाधे नर हीमत बिना ।
(यो) वीरा हदो बोल, पातल सागै पेखियो ॥११॥

अब सग सारा आस, राण रीत बुट राखसी ।
 रहो माहि सुखरास, एबालिग प्रभु आप रै ॥१२॥
 मान मोद मीसोद, राजनीत बट राखणो ।
 (ई) गवरमिट री गोद, फळ मीठा-दीठा फता ॥१३॥

(सकलित)

कपूत-सपूत

—हिगळाजदान कवियो

कपूत (गीत)

बहियो फरजद न मानै काई, छक तरुणाई मछर छिलै ।
महली नू तो मिलै कमाई, माईता नू भूड मिलै ॥१॥

पढ-पढ ठीक सीख पडवा मा, कडवा वचना दगध करै ।
जोमै धी गोहू जोडायत, मा तोडायत भूख मरै ॥२॥

बरतै सोड-सोडिया बेटो, पैमद हेटी बाप पडै ।
मूडां हूत न बोलै मीठो, लालो बूडा हूत सडै ॥३॥

सरवण न हूवै हियो सिळावण, हियो जळावण कस हूवै ।
घोर्यै काम कुटीजै थाळी, कळजुग राळी भाग कुवै ॥४॥

सपूत (गीत)

सरवण री रीत प्रीत सरसावै, चावै कुसळ ऊजळै चीत ।
जाया भला धिनो-धिन जानै, मानै कर तीरथ माईत ॥१॥

हीडा करै हुकम मे हालै, लाभ सपूती तणो लहै ।
माईता राखै सिर माथै, रज पावा री आप रहै ॥२॥

दाखै फजर भला मुख दीठा, मीठा वचना न को मणा ।
पोखै सद भोजन पूगरणा, तन मन माता-पिता तणा ॥३॥

साचै मन राखै घर साहू, बैठै सहज घणी बरदास ।
बेटो इसी मिलै जो विरळो, तिरळोकी मा किया तलास ॥४॥

(सकलित)

डा० मनोहर शर्मा

जन्म . आसोज वदी २, स० १९७२
वि० । विसाऊ (झुझुण)
राजस्थान ।

भणार्ई एम० ए०, पी-एच० डी,
साहित्यरत्न, काव्यतीर्थ ।

साहित्य-

साधना लारलै पचास बरसा सू
अध्यापन साथै साहित्य-सेवा
सारू समर्पित । चाळीस
पोथिया अर करीब तीन सौ
शोध-लेख प्रकाशित । 'वरदा'
तथा 'विश्वभरा' शोध-
पत्रिकावा रो सम्पादन ।

पद तथा

सम्मान अध्यक्ष—हिन्दी विश्वभारती
(बीकानेर), संगीत भारती
(बीकानेर), उपाध्यक्ष—
राजस्थान साहित्य समिति
(विसाऊ) । कलकत्ता, बंबई,
दिल्ली तथा बीकानेर रो
सस्थावा द्वारा पुरस्कृत ।
तरुण साहित्य परिषद्,
विसाऊ रो तरफ सू अभि-
नदन-ग्रथ समर्पित ।

वर्तमान

ठिकाणो . १९, कैलाश निकुज, राणी
बजार, बीकानेर (राज-
स्थान ।